VARSHA
X th A

विश्व का सामान्य भूगोल

भाग २

की

सरल, सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम

कुञ्जी

(कक्षा X के लिए)

ND

Price 1-60

विश्व का सामान्य भूगोल

भाग 2

की

सरल, सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम

कुन्जी

(कक्षा दसवीं के लिए)

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya
Bharatiya Vidya
606

प्रकाशक :

नन्दलाल दयाराम

एजूकेशनल पब्लिशर्स

नई सड़क, दिल्ली-110006

ा संस्करण]

[मूल्य 1.60 रु०

विषय-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
अध्याय 1 :	विश्व के प्रकृतिक साधन और प्रमुख मानव व्यवसाय	1
अध्याय 2 :	जैविक साधन	[illegible]
अध्याय 3 :	कृषि	12
अध्याय 4 :	विश्व की अर्थव्यवस्था में खनिज	20
अध्याय 5 :	उद्योग-धन्धे	29
अध्याय 6 :	यातायात और संचार	40
अध्याय 7 :	व्यापार	53
अध्याय 8 :	विश्व की जनसंख्या	64
अध्याय 9 :	आर्थिक विकास का प्रारूप	73

Bhawan's Sri ... acharya ...
606
Vidya ... Mandir

अध्याय I

विश्व के प्राकृतिक साधन और प्रमुख मानव व्यवसाय

भूमिका—हमने निचली कक्षाओं में भूगोल के अध्ययन के अन्तर्गत पृथ्वी से सम्बन्धित बातों के अतिरिक्त यह सीखा है कि किस प्रकार मानव पृथ्वी के विभिन्न भागों में रहता है तथा किस प्रकार और क्यों मानव समाज का दो विभिन्न प्राकृतिक प्रदेशों में रहन-सहन का तरीका, खान-पान, पहनावा तथा मकान आदि में अन्तर पाया जाता है। ये अन्तर विभिन्न भौगोलिक दशाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों में वातावरण के प्रति मनुष्य की विभिन्न प्रतिक्रियाओं के कारण पाये जाते हैं। हम यहाँ अध्ययन करेंगे कि किस प्रकार मनुष्य अपने को आर्थिक क्रियाओं में लगाकर अपना जीवन निर्वाह करता है। आर्थिक क्रिया वह क्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि कर सुविधापूर्वक रहता है। भोजन प्राप्त करना, रहने के लिए मकान बनाना तथा पहनने के लिए कपड़ा बुनना ऐसी ही क्रियाएँ हैं। भोजन, कपड़ा और मकान ही मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति में मनुष्य आदि काल से लगे हुए हैं। जैसे-जैसे कुशलताओं का विकास हुआ वैसे-वैसे ही मनुष्य प्राथमिक साधनों का अच्छी तरह प्रयोग करने लगा। उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक उत्तम उत्पादन किया। उसने अधिक सुविधापूर्वक रहना और अच्छी तरह से काम करना सीखा। उसकी आवश्यकताएं भी अनेकों प्रकार होने लगीं। आर्थिक प्रयास भी अधिक गहन, अधिक विशिष्ट एवं जटिल होने लगे। मनुष्य अतिरिक्त उत्पादन करने लगा और अपनी आवश्यकता भर की वस्तुओं का प्रयोग कर, जो अतिरिक्त उत्पादन था उसका दूसरों से विनिमय किया, जिनको उसकी आवश्यकता थी।

आर्थिक क्रियाएँ विभिन्न प्रकार की हैं जिनमें उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा खपत सम्मिलित हैं। ये क्रियाएँ अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए भारत के उत्तरी-पूर्वी भागों में अधिकतर कृषि पुरानी पद्धति से की जाती है, जबकि कलकत्ता तथा बम्बई आदि नगरों में

2. इनकी मात्रा भली-भाँति निश्चित की जा चुकी है।	2. इनकी मात्रा भली-भाँति निश्चित नहीं की गई है।

प्रश्न (3) आपूर्ति साधन और अनापूर्ति साधन।
उत्तर—

आपूर्ति साधन	अनापूर्ति साधन
1. यह वह साधन है जो एक बार समाप्त होकर दोबारा पैदा किया जा सकता है।	1. यह एक बार खनन करने तथा उपयोग करने के बाद समाप्त हो जाता है।
2. इमारती लकड़ी आपूर्ति साधन है।	2. कोयला व खनिज तेल अनापूर्ति साधान है।

प्रश्न (4) चक्रीय साधन और प्रवाही साधन।
उत्तर—

चक्रीय साधन	प्रवाही साधन
1. ये खनिज साधन एक बार उपयोग में लाने के बाद दोबारा प्रयोग में लाये जा सकते हैं।	1. ये साधन प्राकृतिक चक्र में हमेशा विद्यमान होते हैं।
2. ताँबा चक्रीय साधन का एक उदाहरण है।	2. बहता हुआ जल प्रवाही साधन का उदाहरण है।

प्रश्न (5) प्राथमिक व्यवसाय और द्वितीयक व्यवसाय।
उत्तर—

प्राथमिक व्यवसाय	द्वितीयक व्यवसाय
1. इनमें मनुष्य प्राकृतिक साधनों से उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त करता है।	1. उत्पादों को संशोधित करना द्वितीयक व्यवसाय कहलाता है।
2. शिकार करना, लकड़ी काटना व खनन आदि प्राथमिक व्यवसाय के उदाहरण हैं।	2. सभी प्रकार की फैक्टरियों में लगे रहने वाले श्रमिक द्वितीयक व्यवसाय के अन्तर्गत आते हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से प्रत्येक के लिए एक-एक पारिभाषिक शब्द दीजिए :

1. मानव की आवश्यकता की आपूर्ति का माध्यम—**साधन**।
2. मनुष्य द्वारा अपनी आवश्यकता की तुष्टि करके सुविधापूर्वक रहने की क्रिया—**आर्थिक क्रिया**।

3. प्राकृतिक साधनों के वे भण्डार जो मानव उपयोग के लिए किसी समय प्राप्य हैं—सुरक्षित भण्डार।

प्रश्न 4. नीचे पहले कालम में प्रदेश और दूसरे कालम में उन क्षेत्रों से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाएँ दी गई हैं। दोनों कालमों से सही जोड़े बनाइये।

उत्तर—

प्रदेश	आर्थिक क्रियाएँ
(क) ध्रुवीय	(3) ह्वेल मत्स्य ग्रहण तथा खनिज तेल निकालना।
(ख) पर्वतीय	(2) पशुचारण, कृषि व खनन।
(ग) शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क	(5) खनिज तेल एवं गैस निकालना तथा पशु-चारण।
(घ) मैदानी एवं नदी घाटी	(1) कृषि एवं उद्योग-धन्धे।
(ङ) पठारी	(4) लकड़ी काटना, खनन।

प्रश्न 5. 'आर्थिक क्रियाएँ विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न होती हैं' उदाहरण देकर समझाइये।

उत्तर—आर्थिक क्रियाओं का विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न स्वरूप—आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन करने से पूर्व आर्थिक क्रिया का अर्थ समझना आवश्यक है। आर्थिक क्रिया वह क्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि कर सुविधापूर्वक रहता है। भोजन प्राप्त करना, रहने के लिए मकान बनाना तथा पहनने के लिए कपड़ा बुनना ऐसी ही क्रियाएँ हैं। भोजन, कपड़ा और मकान ही मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति में मानव आदि काल से लगा हुआ है।

आर्थिक क्रियाओं का रूप एक जैसा नहीं है—ये क्रियाएँ विभिन्न प्रकार की हैं जिनमें उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा खपत शामिल हैं। ये क्रियाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न हैं। भारत के उत्तरी-पूर्वी भागों में अधिकतर कृषि पुरानी पद्धति से की जाती है। जबकि कलकत्ता तथा बम्बई आदि नगरों में उच्चकोटि की औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन होता है।

इसी प्रकार पंजाब और हरियाना में आधुनिक तरीके व बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। ये प्रांत केवल उत्पादन ही नहीं करते वरन् देश के अन्य भागों में वितरण भी करते हैं। इस कारण यह भाग आर्थिक दृष्टि से बहुत उन्नत हो गये हैं। आर्थिक क्रियाओं पर जलवायु, मौसम व प्राकृतिक साधनों का बहुत प्रभाव पड़ता है। बिहार हमेशा पिछड़ा रहा है। इस प्रदेश का

उत्पादन, विवरण तथा खपत सदा ही निम्न श्रेणी का रहा है। आंध्र प्रदेश व केरल में मछली पकड़ने का कार्य बड़े पैमाने पर होता है परन्तु अन्य कार्यों में ये प्रदेश उन्नतिशील नहीं हो पाये हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं।

प्रश्न 6. खनिज सम्पदा का तीव्रता से बढ़ता हुआ प्रयोग जहाँ प्रगति का सूचक है वहाँ उसका संरक्षण भी अति आवश्यक है क्यों ?

उत्तर—खनिज सम्पदा के संरक्षण की आवश्यकता—खनिज सम्पदा का तीव्रता से बढ़ता हुआ प्रयोग किसी भी देश की प्रगति का सूचक है। अमेरिका और रूस इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। आज जितने भी वैज्ञानिक उपकरण या घरेलू सामान उपयोग में लाये जाते हैं। ये सब खनिज पदार्थों के प्रयोग के कारण ही सम्भव हो सके हैं। परन्तु समस्या यह है कि यदि सभी खनिज सम्पदा का तीव्रता से प्रयोग कर लिया जाए तो एक दिन ऐसा आ सकता है जबकि यह सम्पदा बिल्कुल ही समाप्त हो जाए। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर क्या होगा ? अतः खनिज सम्पदा के नये भण्डारों को खोजना और उसका संरक्षण करना अति आवश्यक हो जाता है। इस सम्बन्ध में अन्य बातों पर भी विचार किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए यदि सदाहरित विषुवतीय वनों के उपजाऊ भाग को साफ कर दिया जाए तो मृदा अनुर्वर हो जाएगी, पानी रोकने की क्षमता कम होगी, अपरदन होगा, मूल्यवान वनों का स्थान कमजोर वनस्पति ले लेगी और पशु-पक्षी उस क्षेत्र को छोड़ देंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि खनिज सम्पदा के समाप्त होने पर मानव जीवन कठिन हो जायेगा।

अतः मनुष्य को प्राकृतिक सम्पदा का प्रयोग बड़ी बुद्धिमत्ता से करना चाहिए। इसी की शिक्षा हमारे पुराने साधु-महात्माओं तथा विचारकों ने दी। प्रकृति के एक हिस्से के रूप में रहने का प्रयास करना तथा प्रकृति से अपनी आवश्यकता की वस्तु प्राप्त करना। यही गाँधीजी का भी कहना था।

स्वयं करें और खोजें

तालिका दो की मदद से प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसायों में अग्रणी तीन-तीन देशों के नाम बताएँ। इन देशों की आपस में तुलना करते हुए, कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकालिए।

उत्तर—प्राथमिक व्यवसाय—मलेशिया 80.8%
द्वितीयक व्यवसाय—इंग्लैण्ड 42.6%
तृतीयक व्यवसाय—सं० रा० अमेरिका 61.1%

महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष :

इन देशों के व्यवसायों की तुलना से यह निष्कर्ष निकलता है कि मलेशिया में प्राथमिक व्यवसाय में सबसे अधिक लोग लगे हुए हैं। द्वितीयक व्यवसाय में इंग्लैण्ड सबसे आगे है और तृतीयक व्यवसाय में संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे ऊपर है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मलेशिया एक ऐसा देश है जो प्रगति की ओर नहीं बढ़ सका है। इंग्लैण्ड प्रगतिशील देश है और संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे अधिक प्रगतिशील है।

अध्याय 2
जैविक साधन

भूमिका : जैविक साधनों के अन्तर्गत वनस्पति तथा प्राणी जगत सम्मिलित हैं जो मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। इनका अध्ययन तीन श्रेणियों में किया गया है। जिसमें पेड़-पौधे, पालतू पशु तथा समुद्री व अन्तःस्थलीय मत्स्य ग्रहण आते हैं।

जहाँ तक वनस्पति जगत से प्राप्त साधन का प्रश्न है, उसमें वृक्षों से मकान, नाव, फर्नीचर आदि बनाने के लिए इमारती लकड़ी तथा ईंधन प्राप्त होता है। घास का उपयोग मनुष्य भेड़-बकरी, गाय-बैल, ऊंट तथा अन्य पशुओं को चराकर अप्रत्यक्ष रूप से करता है। आदि काल से बहुत लम्बे अनुभव के बाद मनुष्य ने गेहूँ और चावल जैसे पौधों को खाद्यान्न के लिए चुना। कपड़ों के लिए कपास तथा अपनी अन्य विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तिलहन और रबर जैसे पौधों को अपनाया।

मनुष्य किस प्रकार वनस्पत्ति जगत का प्रयोग करता है, यह समझने के लिए हम विश्व के विभिन्न भागों में पाई जाने वाली प्राकृतिक वनस्पतियाँ तथा वनों के विस्तार का वर्णन किया गया है। प्राकृतिक वनस्पति वह पादप जीवन है जो अपने प्रदेश की जलवायु तथा मृदा के प्रभाव में पनपता है। वन वे क्षेत्र कहलाते हैं, जिनमें वृक्ष तथा कुछ घास शामिल है। यह मानव के लिए उपयोगी है। इसलिए मनुष्य उनका सदुपयोग व दुरुपयोग करता है। विश्व के प्रमुख वनस्पति क्षेत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, जिससे हम भली-भाँति समझ सकें कि मनुष्य किस प्रकार अपनी

वन सम्पदा का प्रयोग करता है। पेड़-पौधों की विभिन्न जातियाँ होती हैं। प्रत्येक जाति शैली, स्थल रूपों, जलवायु, जलापूर्त्ति, मृदा तथा अन्य पौधों की स्पर्धा से बहुत प्रभावित होती है। जलवायु, प्रभावित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है। इसीलिए प्राकृतिक वनस्पति तथा जलवायु प्रदेशों में आपसी निकट का सम्बन्ध है।

विश्व के कुल भू भाग के $\frac{1}{6}$ भाग पर घासभूमियों का विस्तार है। घासभूमियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। (1) उष्ण कटिबंधीय घासभूमियाँ (2) शीतोष्ण कटिबंधीय घासभूमियाँ। इनमें से अधिकाँश को स्थानीय नामों से जाना जाता है। अफ्रीका में उष्ण कटिबंधीय घासभूमियों को सवाना, दक्षिण अमेरिका में कम्पोस तथा लानोस कहते हैं। उष्ण कटिबंधीय घासभूमियाँ वन्य-जीवन में घनी हैं। यह संसार के शिकारियों को आकर्षित करती हैं। इनका पशुचारण के लिए विशेष महत्त्व है। सूडान, ब्राजील तथा अन्य प्रदेशों में तो इन घासभूमियों को साफ करके, कृषि के काम में लाया जाता है।

स्वाध्याय

पुनर्विचार

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :

प्रश्न (1) जैविक साधनों के दो प्रमुख वर्ग कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—जैविक साधनों के दो प्रमुख वर्ग निम्नलिखित हैं :

1. वनस्पति 2. प्राणी जगत।

प्रश्न (2) प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले दो प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले दो प्रमुख कारक 1. जलवायु 2. स्थल रूप हैं।

प्रश्न (3) अधिकाँश विषुवतीय वन अभी तक व्यावहारिक रूप से अछूते क्यों हैं ?

उत्तर—अछूते रहने का कारण—अधिकाँश विषुवतीय वन अभी तक व्यवहारिक रूप से इसलिए अछूते हैं क्योंकि इन क्षेत्रों की जलवायु हानिकारक है और ये वन बहुत ही घने हैं जिनको काटना आसान काम नहीं है।

प्रश्न (4) संसार के पाँच सागौन उत्पादक देशों के नाम बताओ।

उत्तर—संसार के पाँच सागौन उत्पादक देश निम्नलिखित हैं।

1. बर्मा 2. थाईलैंड 3. श्रीलंका 4. मलेशिया 5. भारत।

प्रश्न (5) चार प्रमुख उत्पादों का नाम बताओ।

उत्तर—पशुओं से प्राप्त चार प्रमुख उत्पाद निम्नलिखित हैं;
1. दूध व दूध से बने पदार्थ 2. माँस 3. ऊन 4. खाल व चमड़ा।

प्रश्न (6) संसार के कौन-कौन से प्रदेश पशुपालन के लिए प्रसिद्ध हैं ?

उत्तर—संसार के निम्नलिखित प्रदेश पशुपालन के लिए प्रसिद्ध हैं;
1. उष्ण कटिबंध घासभूमि। 2. शीतोष्ण कटिबंध घासभूमि।

प्रश्न (7) पशुओं से प्राप्त दो रेशों के नाम बताइये।

उत्तर—पशुओं से प्राप्त दो रेशों के नाम निम्नलिखित हैं;
1. ऊन 2. रेशम।

प्रश्न (8) संसार के चार प्रमुख मत्स्य ग्रहण क्षेत्र बताइये।

उत्तर—संसार के चार प्रमुख मत्स्य ग्रहण क्षेत्र निम्नलिखित हैं :
1. विस्के की खाड़ी से उत्तर में खेत सागर तक का क्षेत्र।
2. उत्तर-पश्चिम अटलाँटिक महासागर जो दक्षिण में न्यूइंग्लैण्ड से लेकर उत्तर में लैब्राडोर तक फैला है।
3. उत्तर-पश्चिमी प्रशान्त महासागर।
4. उत्तर-पूर्वी प्रशान्त महासागर।

प्रश्न 2. अन्तर बताइये :

प्रश्न (1) विषुवतीय वन और शंकुधारी वन।

उत्तर—

विषुवतीय वन	शंकुधारी वन
1. ये वन अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं।	1. ये वन कम वर्षा वाले क्षेत्रों में जहाँ शीत ऋतु अधिक ठण्डी तथा भूमि कम उपजाऊ होती है, मिलते हैं।
2. ये वन बहुत घने हैं।	2. ये वन घने नहीं हैं।
3. यहाँ की जलवायु हानिकारक है।	3. यहाँ की जलवायु हानिकारक नहीं है।
4. इनका उपयोग कम मात्रा में होता है।	4. इनका उपयोग अधिक मात्रा में होता है।
5. इन वनों के मुख्य वृक्ष एबोनी महोगनी तथा रबर हैं।	5. इन वनों के मुख्य वृक्ष फर, पाइन तथा स्प्रूस हैं।

प्रश्न (2) उष्ण कटिबंधीय घासभूमि और शीतोष्ण कटिबंधीय घासभूमि।

उत्तर—

उष्ण कटिबंधीय घासभूमि	शीतोष्ण कटिबंधीय घासभूमि
1. इस घास भूमि को स्थानीय नामों से जाना जाता है।	1. इस घासभूमि को भी स्थानीय नाम से जाना जाता है।
2. अफ्रीका में इसे सवाना, दक्षिणी अमेरिका में कम्पोस तथा लानोस कहते हैं।	2. इसे कनाडा में प्रेमरी, सोवियत संघ में स्टैपी, अर्जेन्टाइना में पम्पास, दक्षिणी अफ्रीका में वेल्ड तथा आस्ट्रेलिया में डाउन कहते हैं।
3. ये घासभूमियाँ वन्य जीवन में घनी हैं।	3. ये पशुपालन तथा भेड़पालन में प्रसिद्ध हैं।
4. यहां संसार भर के शिकारी आते हैं।	4. यहाँ शिकारी नहीं आते।
5. इन घासभूमियों को साफ करके कृषि के काम में लाया गया है।	5. इसके कुछ भागों को साफ करके गेहूँ पैदा किया जाता है।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए दो कालमों से सही जोड़े बनाइये :

उत्तर—

वन	वनोत्पाद
(1) विषुवतीय वन	(3) एबोनी, महोगनी तथा रबर
(2) मानसून वन	(4) साल और सागोन
(3) उपोष्ण कटिबंधीय सदाहरित वन	(2) जैतून ओक तथा कार्क
(4) उपोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती के वन	(5) शहतूत, कपूर, चाय
(5) टैगा	(1) फर, पाइन और स्प्रूस

प्रश्न 4. जैविक साधनों से आप क्या समझते हैं ? ये मनुष्य के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं ?

उत्तर—जैविक साधनों का अर्थ—जो साधन वनस्पति तथा प्राणी-जगत द्वारा प्राप्त होते हैं। उन्हें जैविक साधन कहते हैं। ये मनुष्य के लिए बड़ी उपयोगी हैं। जैविक साधनों के अन्तर्गत पेड़-पौधे, पालतू पशु तथा समुद्री व अन्तः स्थलीय मत्स्य ग्रहण आते हैं।

जैविक साधनों का मनुष्य के लिए उपयोग—जैविक साधन मनुष्य के लिए बड़े उपयोगी हैं। इनके अभाव में मानव जीवन असम्भव नहीं तो कठिन

अवश्य है। जहाँ तक वृक्षों का प्रश्न है ये बड़े उपयोगी हैं। इनका अपना व्यापारिक महत्व है। इनकी लकड़ी भवन निर्माण, घरेलू फर्नीचर, पोत निर्माण तथा रेलवे स्लीपरों के काम आती है। वनों से फल भी प्राप्त होता है। घास पशुचारण के लिए उपयोगी है। शिकारी यहाँ जंगली जानवरों का शिकार करने आते हैं। ये घासभूमियाँ पशु पालन तथा भेड़-पालन के लिए भी प्रसिद्ध हैं। इनसे गोंद, रबर, चाय व तेल भी प्राप्त होता है। जहाँ तक पशुओं का प्रश्न है। इनसे दूध, मांस, खाल, चमडा प्राप्त होता है। पशु सवारी के काम भी आते हैं। सागरों से मछली प्राप्त होती है।

इस प्रकार ये जैविक साधन मनुष्य के लिए बड़े उपयोगी हैं।

प्रश्न 5. "वन राष्ट्र की निधि है।" कैसे ? उपयुक्त उदाहरण देते हुए अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—वन राष्ट्र की निधि—वनों को राष्ट्र की निधि कहना ठीक है। जिस देश में वनों का जितना अधिक उपयोग किया जाता है वह देश उतना ही उन्नति की ओर बढ़ता जाता है। वन राष्ट्र की निधि है इस सम्बन्ध में हम निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत कर सकते हैं :

1. **कागज का उद्योग**—यह उद्योग वनों से मिलने वाली मुलायम लकड़ी पर निर्भर करता है। मुलायम लकड़ी शीतोष्ण कटिबन्ध तटीय वनों से प्राप्त होती है।

2. **माचिस का उद्योग**—यह उद्योग भी वनों से प्राप्त होने वाली लकड़ी पर निर्भर करता है। इसके लिए भी मुलायम लकड़ी की आवश्यकता होती है।

3. **गंदा बेरोजा साफ करने का उद्योग**—यह वार्निश और बूट पालिस बनाने व पेंट बनाने के काम आता है। यह चीड़ के वृक्ष से प्राप्त होता है।

4. **खेल का सामान बनाने का उद्योग**—हाकी और क्रिकेट बैट के लिए क्रमशः शहतूत और विलो लकड़ी प्रयुक्त होती है।

5. **लाख का उद्योग**—लाख का कीड़ा 'कुसुम' वृक्ष पर पलता है। उसके शरीर से जो पदार्थ निकलता है उससे लाख बनती है।

6. **रबड़ उद्योग**—रबड़ उद्योग रबड़ के वृक्षों पर निर्भर है। इससे मोटर व साइकिल के ट्यूब तथा टायर बनते हैं।

7. **नारियल उद्योग**—नारियल की जटाओं से चटाइयाँ, रस्सियाँ और लचकदार गद्दे बनते हैं।

8. **फर्नीचर व भवन निर्माण की वस्तुएँ**—वनों की लकड़ी से फर्नीचर व इमारती सामान बनता है।

9. **प्लाईवुड उद्योग**—इस उद्योग को भी आजकल काफी बढ़ावा मिला हुआ है।

इस प्रकार ये वन देश में अनेक प्रकार के उद्योग-धन्धे स्थापित करवाते हैं। इससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है विदेशी मुद्रा संचित होती है। देश के लोगों को रोजगार मिलता है। वन वर्षा में भी सहायक होते हैं। जलवायु उत्तम होता है। भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। यदि वन न होते तो किसी भी देश का आर्थिक विकास रुक जाता। अतः यह कहना उचित ही है कि वन राष्ट्र की निधि हैं।

स्वयं करें और खोजें—

उत्तर—नोट : इन प्रश्नों को एटलस की सहायता से कीजिए।

अध्याय 3

कृषि

भूमिका : संसार के अधिकांश लोगों का व्यवसाय कृषि है। लगभग $\frac{3}{5}$ कामगर जनसंख्या कृषि-कार्य में लगी हुई है। कृषि मानव जीवन के लिए अति आवश्यक है। कृषि से ही मनुष्य को खाद्यान्न, उद्योग-धन्धों के लिए कच्चा माल जैसे—कपास, जूट तथा गन्ना और पेय-पदार्थ जैसे चाय व कहवा तथा अन्य चिकित्सा सम्बन्धी उत्पाद मिलते हैं।

इस अध्याय में हम विश्व की मुख्य फसलों, उनके विश्व-वितरण तथा उनके आर्थिक महत्व के सम्बन्ध में पढ़ेंगे। हम यहाँ अध्ययन करेंगे कि किन फसलों के उत्पादन में भारत की स्थिति क्या है, साथ ही अन्य प्रमुख देशों व प्रदेशों के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन करेंगे। विश्व का $\frac{1}{5}$ भाग ही ऐसा है जहाँ की जलवायु, स्थलाकृति एवं मुद्रा कृषि के योग्य हैं। कृषि के अलावा विश्व का ऐसा कोई ओर प्रमुख व्यवसाय नहीं है जो जलवायु एवं वातावरण पर उतना निर्भर हो। पर्याप्त प्रकाश, वर्षा तथा लम्बा वर्धनकाल जलवायु के प्रमुख कारक हैं जो कृषि को प्रभावित करते हैं। उष्ण तथा शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पर्याप्त पानी की आपूर्ति, पालारहित एक लम्बा और उष्णवर्धन काल, उच्च अक्षांसों में तेज पवन तथा खराब मौसम कृषि की सीमा निर्धारित करने वाले कारक हैं। गहरी मद्रा पौधों के लिए अधिक पोषक तत्व तथा ह्यूमस प्रदान करती है। परन्तु प्रत्येक फसल के लिए अलग-अलग प्रकार की मुद्रा अधिक उपयुक्त होती है। जलौठ ज्वालामुखी तथा

काली मृदा विश्व की मानी हुई मृदा है जो कृषि के लिए बहुत ही उपयोगी है।

आजकल नई-नई कृषि प्रणालियाँ चली हैं जो बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। कृषि की नवीन तथा उन्नत तकनीकों जैसे उत्तम बीज, सिंचाई की उत्तम सुविधाएँ, जल-विकास की व्यवस्था, रसायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाइयों आदि ने कृषि उत्पादन को बढ़ा दिया है। आज से 100 वर्ष पूर्व अतिरिक्त खाद्यान्न भारी मात्रा में सुलभ था, परन्तु आज जनसंख्या के बढ़ जाने के कारण अनाज का भण्डार पर्याप्त नहीं है। इसलिए कृषि का भविष्य अच्छी शिक्षा, तकनीक तथा उस तकनीक को बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयोग करने पर निर्भर करेगा। भिन्न भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण संसार में विभिन्न कृषि पद्धतियों का विकास हुआ है।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

प्रश्न (1) कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तीन कारक कौन से हैं ?

उत्तर—कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तीन कारक :

(1) पर्याप्त प्रकाश (2) वर्षा (3) लम्बा वर्धन काल।

प्रश्न (2) कृषि के लिए उपयोगी मृदाओं के नाम बताइये।

उत्तर—कृषि के लिए उपयोगी मृदाएँ निम्नलिखित हैं :

जलोढ़, ज्वालामुखी तथा काली मृदा विश्व की मानी हुई मृदा है जो कृषि के लिए बहुत ही उपयोगी है। गहरी मृदा पौधों के लिए अधिक पोषक है।

प्रश्न (3) शस्यावर्तन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—शस्यावर्तन का अर्थ—भूमि के किसी टुकड़े पर विभिन्न फसलों का क्रमबद्ध आवर्त्तन करने की प्रक्रिया शस्यावर्त्तन कहलाती है। इसे मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसे फसलों का हेर-फेर भी कहते हैं।

प्रश्न (4) रोपण कृषि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—रोपण कृषि—बृहत पैमाने पर की जाने वाली एक फसली कृषि, रोपण कृषि कहलाती है। इसकी व्यवस्था कारखानों की उत्पादन व्यवस्था से मिलती-जुलती होती है। इसमें अधिकतर बड़े-बड़े फार्म अत्यधिक पूंजी का विनियोग तथा कृषि और व्यापार में आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीक अपनाई जाती है।

प्रश्न (5) मिश्रित कृषि किसे कहते हैं ?

उत्तर—मिश्रित कृषि—ऐसी कृषि जिसमें फसलों का उत्पादन तथा पशु-

पालन दोनों कार्य साथ-साथ होते हैं, मिश्रित कृषि कहलाती है। अर्थ व्यवस्था में ये दोनों क्रियाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं।

प्रश्न (6) हरी क्रान्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—हरी क्रान्ति—कृषि में क्रान्तिकारी विकास, हरी क्रान्ति कहलाता है। इसमें मुख्यतः नये बीजों, खादों और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग तथा सुनिश्चित जलपूर्ति की व्यवस्था और नवीन उपकरणों के प्रयोग के परिणाम स्वरूप कुछ अनाजों की पैदावार में बहुत वृद्धि हुई है।

प्रश्न (7) गेहूँ के विपरीत चावल का विश्व व्यापार कम क्यों है ?

उत्तर—चावल के विश्व व्यापार के कम होने का कारण—गेहूँ के विपरीत चावल का विश्व व्यापार बहुत कम है, क्योंकि चावल के मुख्य उत्पादक देश, चीन, भारत, बंगलादेश, जापान तथा इण्डोनेशिया हैं और ये देश चावल के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं। जनसंख्या के अधिक घनत्व वाले इन देशों में चावल के खाने वाले लोगों की संख्या अधिक है। अतः चावल के मुख्य उत्पादक देश होते हुए भी उन्हें चावल का आयात करना पड़ता है।

प्रश्न (8) तिलहन के मुख्य निर्यातक देशों के नाम बताइये।

उत्तर—तिलहन के मुख्य निर्यातक देश निम्नलिखित हैं :

भारत, ब्राजील तथा पश्चिमी अफ्रीका के देश तिलहन के मुख्य निर्यातक देश हैं।

प्रश्न (9) प्रमुख तीन पेय फसलें कौन-सी हैं ?

उत्तर— प्रमुख तीन पेय फसलें—1. चाय 2. कहवा 3. कोको।

प्रश्न (10) रेशेदार तीन फसलों के नाम बताइये।

उत्तर— रेशेदार तीन फसलें—1. कपास 2. जूट 3. रेशम।

प्रश्न (11) चीनी के प्रधान दो स्रोत कौन से हैं ?

उत्तर— चीनी के दो प्रधान स्रोत—1. गन्ना 2. चुकन्दर।

प्रश्न (12) कृषि जोत से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—कृषि जोत—विभिन्न प्रकार की कृषि व्यवस्था में जोत की सीमा भिन्न होती है। स्थानान्तरित कृषि में अक्षत वन्य भूमि के टुकड़ों को साफ किया जाता है। एशिया और अफ्रीका में परम्परागत आत्म-निर्वाह-कृषि के अन्तर्गत खेतों का आकार सामान्यतः छोटा होता है। एशिया में नदियों के पास खेत बहुत छोटे होते हैं। यह जोत कभी-कभी तो इतनी छोटी होती है कि वह आर्थिक रूप से उपयोगी साबित नहीं होती। इन क्षेत्रों में मानव श्रम प्रधान है। दूसरी ओर विस्तृत व्यापारिक कृषि है जहाँ खेती का आकार बहुत बड़ा होता है। यहाँ पर बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा खेती होती हैं।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करो :

(1) स्थाई कृषि और स्थानान्तरी कृषि।

उत्तर—

स्थाई कृषि	स्थानान्तरी कृषि
1 खेती का वह ढंग जिसमें एक ही खेत पर स्थाई रूप से कृषि की जाती है।	1. इस प्रकार की कृषि में निरन्तर स्थान परिवर्तन करके खेती की जाती है।
2. यह खेती करने का उत्तम ढंग है।	2. यह खेती का उत्तम ढंग नहीं है।
3. इस प्रकार की कृषि में खेतों में उत्तम खाद आदि का प्रयोग करके भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखा जाता है।	3. इसमें कृषि के लिए भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए जमीन को कुछ समय के लिए खाली छोड़ दिया जाता है।
4. इस प्रकार की कृषि में भूमि की उर्वरता मनुष्य द्वारा पैदा की जाती है।	4. इस कृषि में भूमि की उर्वरता नैसर्गिक रुप से उत्पन्न होती है।

प्रश्न (2) आत्म-निर्वाह कृषि और व्यापारिक कृषि।

उत्तर—

आत्म-निर्वाह कृषि	व्यापारिक कृषि
1. आत्म-निर्वाह कृषि में जितना उत्पादन होता है वह सब का सब वहाँ के लोगों द्वारा उपयोग कर लिया जाता है।	1. इस कृषि को किसान अधिकतर बेचने के लिए उगाता है।
2. यह कृषि विभिन्न प्रकार की हो सकती है।	2. यह कृषि भी विभिन्न प्रकार की हो सकती है।
3. इस प्रकार की कृषि अधिकतर अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र में होती है।	3. इस प्रकार की कृषि कम जनसंख्या वाले क्षेत्र में होती है।
4. इस कृषि में श्रम की पूर्ति मानव व पशुओं द्वारा की जाती है।	4. इस प्रकार की कृषि में श्रम की पूर्ति मशीनों द्वारा की जाती है।
5. इसमें कुशल श्रमिकों की आवश्यकता नहीं पड़ती।	5. इसमें कुशल श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है।

प्रश्न (3) गहन कृषि और विस्तृत कृषि।

उत्तर—

गहन कृषि	विस्तृत कृषि
1. इस कृषि के अन्तर्गत किसान भूमि के छोटे टुकड़े पर अधिकाधिक परिश्रम कर, बेचने के लिए अधिक उपज प्राप्त कर लेता है।	1. इस कृषि के अन्तर्गत किसान भूमि के बहुत बड़े टुकड़े पर मशीनों की सहायता से अधिक उपज प्राप्त करता है।
2. इस खेती में श्रम अधिक लगता है।	2. इस खेती में श्रम तथा पूंजी दोनों कम मात्रा में लगते हैं।
3. यह खेती उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जनसंख्या का दबाव सबसे अधिक होता है।	3. यह खेती उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जनसंख्या का दबाव कम होता है।

प्रश्न (4) बसन्तकालीन गेहूँ और शीतकालीन गेहूँ।

उत्तर—

बसन्तकालीन गेहूँ	शीतकालीन गेहूँ
1. यह उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में पैदा होता है।	1. यह शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में पैदा होता।
2. यह गेहूँ भारत और पाकिस्तान में विशेष रूप से उगाया जाता है।	2. यह गेहूँ पश्चिमी योरुप, चीन तथा भूमध्यसागरीय जलवायु वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है।
3. भारत व पाकिस्तान आदि में शीत कालीन गेहूँ नहीं उगाया जाता।	3. रूस, अमेरिका, आस्ट्रेलिया के डाउन क्षेत्र में दोनों प्रकार का गेहूँ उगाया जाता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से प्रत्येक के लिए एक-एक पारिभाषिक शब्द दीजिए :

(1) पुराने खेतों का उपजाऊ शक्ति कम होने पर नये खेतों की ओर चले जाने की पद्धति—**स्थानान्तरी कृषि।**

(2) वैज्ञानिक तथा व्यापारिक खेती जिसमें फैक्टरी उत्पादन की भाँति एक ही फसल का अधिक उत्पादन होता है—**रोपण कृषि।**

(3) किसी क्षेत्र में वर्ष का वह भाग जिसमें वनस्पति या फसलों की वृद्धि के लिए पर्याप्त तापमान एवं वर्षा हो तथा जो हानि कारक पाले से मुक्त हो।—**शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र।**

(4) वह कृषि जिसमें उत्पादित वस्तुएँ मुख्यतः किसान के घर में ही उपयोग में आ जाती हैं—आत्म निर्वाह कृषि।

प्रश्न 4. गेहूँ, चावल, गन्ना, कपास, जूट, चाय, तथा रबर की उपज के लिए कुछ अनुकूल दशाएँ दी गई हैं, उनका उक्त फसलों से साम्य स्थापित करिए।

उत्तर—(1) बाढ़, मैदान एवं डेल्टाई क्षेत्र—चावल।

(2) खुली धूप, आर्द्र जलवायु एवं गहरी मिट्टी—गन्ना।

(3) उगते समय शीतल तथा आर्द्र मौसम और पकते समय खुली धूप, 90 दिन पालारहित वर्धन काल, मुरभुरी, दुमट एवं काली मिट्टी—गेहूँ।

(4) वर्ष भर हल्की वर्षा, उपजाऊ एवं जल निकास वाली भूमि, सस्ते एवं कुशल श्रमिक—चाय।

(5) वर्ष भर उच्च तापमान व अधिक वर्षा, गहरी दुमट मिट्टी तथा पर्याप्त श्रम—रबर।

(6) 200 दिन पाला रहित लम्बा वर्धनकाल, जलोढ़ एवं लावा निर्मित काली मिट्टी—कपास।

(7) अधिक लम्बे समय तक उच्च तापमान, पर्याप्त वर्षा, गहरी दुमट मिट्टी व श्रम की अधिकता—जूट।

प्रश्न 5. कपास का क्या महत्त्व है? कपास कितने प्रकार की है? कपास उत्पाद क्षेत्रों का उल्लेख करो।

उत्तर—कपास का महत्त्व—कपास एक महत्त्वपूर्ण पौधा है। इससे वस्त्र तैयार किये जाते हैं। यह हमारे शरीर को ढाँपने व गर्मी-सर्दी से बचाने के काम आता है। इससे भारत विदेशी मुद्रा भी अर्जित करता है। कपास तन्तुओं का राजा है। सूती मिलों में कपास का सूत ही वस्त्र बनाने के काम आता है। अनेक लोगों को मिलों में रोजगार मिलता है। देश आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाता है।

कपास के प्रकार—कपास के प्रकार का वर्गीकरण उसके रेशे के आधार पर किया जाता है। कपास के निम्नलिखित प्रकार हैं—

1. लम्बी रेशे वाली कपास 2. मध्यम रेशे वाली कपास 3. छोटे रेशे वाली कपास।

कपास के उत्पादक क्षेत्र—संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ। प्रत्येक देश विश्व का $\frac{1}{5}$ भाग कपास का उत्पादन करते हैं। दोनों ही देशों में कपास का उत्पादन उनके दक्षिण राज्यों में होता है। कपास के उत्पादन में चीन का तीसरा स्थान है। यहाँ कपास यांग्जी, सीक्यांग के मैदानों में उगाई जाती है।

भारत का कपास के उत्पादन में चौथा स्थान है। यहां कपास मुख्यतः गुजरात के तापी, नर्मदा, माद्री व साबरमती के मैदानों में तथा उत्तरी महाराष्ट्र के तापी, पूरना, वर्धा, पेनगंगा व गोदावरी की घाटी में उगाई जाती है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तथा दक्षिण तमिलनाडु में भी कपास उगाई जाती है।

ब्राजील, मैक्सिको, मिस्र, सूडान, पूर्वी अफ्रीका, सीरिया, ईराक, पाकिस्तान तथा बर्मा में भी चाय, कपास उगाई जाती है।

प्रश्न 6. "दक्षिण-पूर्व एशिया विश्व का अधिकांश चावल उत्पन्न करता है।" इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—अधिक चावल उत्पन्न करने के कारण—दक्षिण और पूर्व एशिया के देशों में चावल अधिक उगाया जाता है। यहाँ इतना अधिक चावल उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण हैं :

1. **उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु**—इन देशों में उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु है अतः यहाँ पर पर्याप्त वर्षा और ताप प्राप्त होता है।

2. **जलौठ मिट्टी**—भूमि समतल है तथा नदी घाटियों में उपजाऊ जलौठ मिट्टी मिलती है। नदी घाटियों में याँगची, सीक्याँग, लाल नदी, मेकाँग, मेनाम, इरावदी, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र उल्लेखनीय हैं।

3. **नहरों द्वारा सिंचाई**—इन क्षेत्रों के तटीय भागों में नहरों द्वारा सिंचाई करके वर्षा की पूर्ति की जाती है।

4. **सस्ते श्रमिक**—यहाँ पर सस्ते श्रमिक मिलते हैं। इन्हें सदियों से इस भाग में धान की खेती करने की कुशलता एवं अनुभव प्राप्त है।

5. **चावल के लिए अनुकूल दशाएँ**—स्थालाकृति मृदा तथा जलवायु सम्बन्धी दशाएं चावल की उपज के लिए आदर्श हैं।

प्रश्न 7. "विश्व के सर्वप्रमुख दोनों खाद्यान्न गेहूँ और चावल कृषि अर्थ-व्यवस्था में एक-दूसरे से भिन्न आचरण करते हैं।" उपयुक्त उदाहरण देते हुए स्पष्ट करिये।

उत्तर—गेहूँ और चावल का कृषि अर्थ-व्यवस्था में भिन्न आचरण—विश्व के सर्वप्रमुख दोनों देश खाद्यान्न गेहूँ और चावल कृषि अर्थव्यवस्था में एक-दूसरे से भिन्न आचरण करते हैं। इस सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि गेहूँ के विपरीत चावल का विश्व व्यापार कम है। इसका कारण यह है कि चावल के मुख्य उत्पादक देश, चीन, भारत, बाँग्लादेश, जापान तथा इण्डोनेशिया हैं और ये देश चावल के सबसे बड़े उपभोक्ता भी हैं। जनसंख्या के अधिक घनत्व वाले इन देशों में चावल के खाने वाले लोगों की संख्या अधिक है। अतः चावल के मुख्य उत्पादक देश होते हुए भी इन्हें चावल का आयात

करना पड़ता है।

चावल का केवल 3% भाग ही विश्व व्यापार में प्रयुक्त होता है। चावल के मुख्य निर्यातक देशों में एशिया के दक्षिण-पूर्वी देश आते हैं। इनमें थाइलैंड, बर्मा तथा कम्बोडिया उल्लेखनीय हैं। कम उत्पादन होते हुए भी ये देश जनसंख्या कम होने के कारण चावल का निर्यात करते हैं।

दूसरी ओर गेहूँ एकमात्र ऐसा धान्य है जिसका भारी मात्रा में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है। पश्चिमी यूरोप के देश, चीन तथा भारत गेहूं के मुख्य आयातक देश हैं।

इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि चावल का उपभोग अधिक मात्रा में होने के कारण इससे विदेशी मुद्रा कम मात्रा में कमाई जाती है। दूसरी ओर गेहूँ का अधिक निर्यात होने से इससे विदेशी मुद्रा अधिक मात्रा में कमाई जाती है।

इस कारण हम कह सकते हैं कि विश्व के सर्वप्रमुख दोनों खाद्यान्न गेहूँ और चावल कृषि अर्थव्यवस्था में एक-दूसरे से भिन्न आचरण करते हैं।

प्रश्न 8. उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की रोपण कृषि की मुख्य विशेताओं का उल्लेख करो।

उत्तर—उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की रोपण कृषि की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

विविध अथवा आत्म-निर्वाह कृषि के विपरीत रोपण कृषि है। इसमें फैक्टरी उत्पादन की भाँति एक ही फसल का उत्पादन होता है। रबर, चाय, कोको, कहवा, केला गन्ना, नारियल, गर्म मसाले, अनानास आदि रोपण फसलें हैं।

विशाल एस्टेटों का होना, भारी मात्रा में पूंजी लगाना, सूक्ष्म तथा वैज्ञानिक कृषि के तरीके, विशेष प्रकार के उपकरणों का प्रयोग अपेक्षाकृत सस्ते स्थानीय अथवा आयातित श्रमिक, यातायात की सुगमता, मशीनीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, यह सभी उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की रोपण कृषि की मुख्य विशेषताएँ हैं।

स्वयं करें और खोजें

प्रश्न—विश्व के रेखा मानचित्र में गेहूँ उत्पादक क्षेत्रों को प्रदर्शित करते हुए गेहूँ निर्यातक देशों के नाम अंकित करिए।

उत्तर—एटलस की सहायता लें।

अध्याय 4

विश्व की अर्थव्यवस्था में खनिज

भूमिका : विश्व की अर्थव्यवस्था में मानव खनिज का प्राचीन काल से ही महत्त्व रहा है। मानव इतिहास पाषाण, ताम्र, कांस्य तथा लौह युगों में विभक्त है। खनिज प्राकृतिक साधन हैं, जिन्हें शैलों से प्राप्त किया जाता है। साल्ट तथा ग्रेनाइट जैसी शैलें सड़क बनाने के काम आती हैं। इनका आर्थिक दृष्टि से कम महत्त्व है। लोहा, ताँबा, सोना खनिजों का अधिक प्रयोग किया जाता है। इन खनिजों की आपूर्ति सीमित है इसलिए ये मूल्यवान हैं। वर्तमान औद्योगिक युग में नये खनिजों की खोज की जा रही है। आधुनिक उद्योग-धन्धों में विभिन्न प्रकार के खनिजों का भारी मात्रा में प्रयोग होने लगा है। इस अध्याय में खनिज के सम्बन्ध में विभिन्न बातों का वर्णन किया गया है। प्रकृति के खनिज किस प्रकार प्राप्त होते हैं, महत्त्वपूर्ण खनिजों का भौगोलिक वितरण, विश्व के प्रमुख उत्पादक देश तथा भारत के प्रमुख खनिज क्षेत्र दिये गये हैं।

खनिज तथा अन्य प्राकृतिक साधनों में भारी अन्तर है। खनिजों का एक बार शोषण करने पर उनकी आपूर्ति नहीं हो सकती, जबकि वनस्पति जलवायु आदि निरन्तर बने रहने वाले प्राकृतिक साधन हैं। खनिजों के खनन होने पर वहाँ से हमेशा के लिए समाप्त हो जाते हैं। इसलिए खनिजों का संरक्षण तथा उनका प्रयोग बहुत ही सावधानी से करने की अति आवश्यकता है।

उपयोगी खनिज शैलों में पाये जाते हैं परन्तु उनका खनन सब जगह समान रूप से नहीं हुआ है। वह शैल जिसमें एक ही प्रकार के खनिजों का संकेन्द्रण होता है, उसे अयस्क कहते हैं खनन छोटे क्षेत्रों में ही सीमित होता है। खनिज तीन प्रकार से पाये जाते हैं। यह सब उनकी रचना की दिशा पर निर्भर है। कुछ धात्विक खनिज स्फाटिक शैलों में पाये जाते हैं, जो दूसरे के साथ ठण्डे होने से बने हैं। इस प्रकार के खनिज प्रायः एक दूसरे खनिज के साथ मिले होते हैं। उदाहरण के लिए चाँदी के साथ जस्ता और सीसा, लोहे के साथ मैंगनीज तथा ताँबे के साथ निकल पाया जाता है।

अधिकांश खनिज कायांतरिक शैलों के प्राचीन पठारों और शील्ड क्षेत्रों में पाये जाते हैं। केवल कोयला तथा खनिज तेल अवसादी शैलों की निम्न भूमियों में पाये जाते हैं।

खुले स्थान पर किए गये खनन कार्य को जिसमें पत्थरों को काट कर या

विस्फोट के द्वारा तोड़कर खनन किया जाता है, उसे खुली खान कहते हैं। खान दो प्रकार की होती हैं—खुले गर्त वाली खान तथा खनिकूप अथवा शैफ्ट माइन।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :

प्रश्न (1) खनिज अन्य प्राकृतिक साधनों से किस प्रकार भिन्न हैं ?

उत्तर—खनिज अन्य प्राकृतिक साधनों से भिन्न—खनिजे तथा अन्य प्राकृतिक साधनों में भारी अन्तर है। खनिजों का एक बार शोषण करने पर उनकी आपूर्ति नहीं हो सकती, जबकि वनस्पति, जलवायु आदि निरन्तर बने रहने वाले प्राकृतिक साधन हैं। उदाहरण के लिए पश्चिमी आस्ट्रेलिया के शुष्क मरुस्थलीय पठारी क्षेत्र की सोने की खानों ने लोगों को आकर्षित किया, परन्तु खनन करने पर जब खनिज समाप्त हुए तो वहाँ के स्थित नगर भी वीरान हो गये।

प्रश्न (2) अवसादी शैलों में पाये जाने वाले प्रमुख दो प्रकार के नाम बताओ।

उत्तर—अवसादी शैलों में पाये जाने वाले प्रमुख खनिज—1. कोयला 2. पैट्रोलियम।

प्रश्न (3) अधिकांश खनिज किस प्रकार के शैलों में पाए जाते हैं ?

उत्तर—खनिज प्राप्ति वाले शैल—अधिकांश खनिज कायान्तरित शैलों के प्राचीन पठारों और शील्ड क्षेत्रों में पाए जाते हैं। केवल कोयला तथा खनिज तेल अवसादी शैलों की निम्न भूमियों में पाये जाते हैं।

प्रश्न (4) खनिजों के वितरण की प्रमुख दो विशेषताएँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर—खनिजों के वितरण की प्रमुख विशेषताएँ :

1. खनिजों के वितरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—अधिकाँश खनिज कुछ ही क्षेत्रों में सीमित हैं जबकि विस्तृत क्षेत्रों में खनिजों की कमी है।

2. खनिज के वितरण के संदर्भ में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सभी धात्विक खनिज प्रायः एक साथ मिलते हैं।

प्रश्न (5) भारत के प्रमुख चार खनिज क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—भारत के प्रमुख चार खनिज क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

1. दक्षिण बिहार में छोटा नागपुर तथा उत्तरी उड़ीसा बहुत ही विकसित खनिज क्षेत्र हैं।

2. मध्य राजस्थान जिसमें मुख्यतः अभ्रक, तांबा, सीसा तथा जस्ता पाया जाता है।

3. दक्षिण क्षेत्र के अन्तर्गत गोआ, मैसूर, पठार एवं आंशिक रूप से

तामिलनाडु में इसका विस्तार आता है।

4. मध्य भारत जिसके अन्तर्गत दक्षिणी मध्य प्रदेश और पूर्वी महाराष्ट्र आते हैं।

प्रश्न (6) अयस्क किसे कहते हैं ?

उत्तर—अयस्क का अर्थ—भूमि से खोदकर निकाली गई धातु का कच्चा रूप 'अयस्क' कहलाता है।

प्रश्न (7) औद्योगिक क्रान्ति का क्या अर्थ है ?

उत्तर—औद्योगिक क्रान्ति का अर्थ—अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिन्होंने उत्पादन के तकनीक और संगठन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिये। इन परिवर्तनों को औद्योगिक क्रान्ति कहते हैं।

प्रश्न (8) दो महत्त्वपूर्ण खनिज ईंधन कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—दो महत्त्वपूर्ण खनिज ईंधन निम्नलिखित हैं—

1. कोयला। 2. खनिज तेल।

प्रश्न (9) शक्ति के प्रमुख तीन स्थाई स्रोतों के नाम बताइये।

उत्तर—शक्ति के तीन प्रमुख स्थाई स्रोत निम्नलिखित हैं :

1. जल विद्युत। 2. परमाणु ऊर्जा। 3. प्राकृतिक गैस।

प्रश्न (10) शक्ति के साधन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—शक्ति के साधन का अर्थ—आधुनिक सभ्यता शक्ति पर आधारित है। औद्योगिक क्रान्ति से पहले मनुष्य उपयोगी सामग्री प्राप्त करने के लिए मानव श्रम तथा पशुओं का शक्ति के रूप में प्रयोग करता था। खाने-पकाने तथा हस्तकला, जैसे जेवर बनाने में कोयले का प्रयोग होता था। वाष्प इंजन इण्टरनल काम्बशन इंजन और विद्युत उत्पादक ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा मनुष्य शक्ति का प्रयोग करता है।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करिये :

प्रश्न (1) खनिज और शैल।

उत्तर—

खनिज	शैल
1. भूपर्पटी से प्राप्त वह पदार्थ जिसमें चट्टानों के विपरीत साधारणतया एक विशेष प्रकार की रासायनिक संरचना होती है।	1. वे सभी कठोर और प्रतिरोधी वस्तुएँ जिनसे भूपर्पटी का निर्माण होता है।
2. यह तीन प्रकार के होते हैं।	1. यह भी तीन प्रकार की होती है।

प्रश्न (2) खुले गर्त वाली खान और खनि कूप।
उत्तर—

खुले गर्त वाली खान	खनि कूप
1. एक खुला गर्त जिससे कि पत्थर प्राप्त किया जाता है खुली खान कहलाता है।	1. भूपर्पटी में किया हुआ एक बड़ा और गहरा छेद जिससे खनिज विशेष प्राप्त किये जाते हैं।
2. इसे बड़े पैमाने की क्वेरी भी कहते हैं।	2. इसे शैफ्ट माइन कहतें हैं।
3. यह अधिक गहरी नहीं होती है।	3. यह तीन किलोमीटर तक गहरे होते हैं।

प्रश्न (3) धात्विक खनिज और अधात्विक खनिज।
उत्तर—

धात्विक खनिज	अधात्विक खनिज
1. धात्विक खनिज आग्नेय तथा कायांतरित शैलों में पाये जाते हैं।	1. अधात्विक खनिज अवसादी शैलों में पाये जाते हैं।
2. लोह पिण्ड, पीतल और शक्तिशाली इंजन धात्विक खनिजों के उत्पाद हैं।	2. सल्फर, कोयला, पैट्रोलियम तथा नमक अधात्विक खनिजों के उत्पाद हैं।
3. ये सामान्यतः ठोस, भारी और कड़ी होती हैं।	3. ये ठोस, भारी और कड़ी नहीं होती।
4. इनके तार खींचे जा सकते हैं।	4. इनके तार नहीं खींचे जा सकते।
5. इसकी चादरें बनाई जा सकती हैं।	5. इसकी चादरें नहीं बनाई जा सकतीं।

प्रश्न (4) पीट और एन्थ्रासाइट।
उत्तर—

पीट	एन्थ्रासाइट
1. इसके विस्तृत निक्षेप सोवियत संघ और कनाडा में हैं।	1. सोवियत संघ में पश्चिमी साइबेरिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्तर अपलेशियन क्षेत्र में एन्थ्रासाइट का अधिकांश भाग निकाला जाता है।

प्रश्न (5) ताप विद्युत और जल विद्युत।
उत्तर—

ताप विद्युत	जल विद्युत
1. यह विद्युत ताप द्वारा तैयार की जाती है।	1. यह विद्युत जल द्वारा तैयार की जाती है।
2. यह विद्युत कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस तथा परमाणु खनिज से तैयार होती है।	2. इस विद्युत को तैयार करने में जल के अतिरिक्त अन्य किसी शक्ति की आवश्यकता नहीं होती।
3. यह विद्युत जिन साधनों द्वारा तैयार होती है ये कभी भी समाप्त हो सकते हैं।	3. जल एक ऐसा साधन है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता।
4. इस विद्युत को तैयार करने में अधिक खर्च होता है।	4. इस विद्युत को तैयार करने में अधिक खर्च नहीं हो पाता।

प्रश्न 3. नीचे कुछ खनिजों का उपयोग एवं उनका वितरण अव्यवस्थित रूप से दिया गया है, उसे व्यवस्थित करके लिखिए।
उत्तर—

खनिज	उपयोग	अग्रणीय देश
1. लोहा	आर्थिक ढाँचे का आधार व मशीन निर्माण।	सोवियत संघ, अमेरिका, चीन।
2. मैंगनीज	लौहपूरक धातु, रंग-रोगन बनाने तथा कीटनाशक दवाओं के प्रयोग में।	सोवियत संघ, भारत, दक्षिण अफ्रीका।
3. अल्युमिनियम	हल्की धातु, वायुयान तथा, तार बनाना।	जमाइका, सोवियत संघ तथा सूरीनाम।
4. ताँबा	मिश्रित धातु, बिजली के तार बनाने व प्राचीन सभ्यता का द्योतक।	संयुक्त राज्य अमेरिका, चिली व सोवियत संघ।
5. सोना	मूल्यवान, आर्थिक स्तर का मापक दण्ड व आभूषण बनाना।	दक्षिण अफ्रीका संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया।
6. कोयला	खनिज ईंधन एवं वस्तु निर्माण।	संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ व चीन।

7. खनिज तेल	गति, ताप व चिकनाई देने वाला साधन।	सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका व सऊदी अरब।

प्रश्न 4. "लोहा और कोयला आधुनिक मशीन सभ्यता के आधार-स्तम्भ हैं।" पश्चिमी यूरोप तथा अमेरिका से उदाहरण देते हुए अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—लोहे और कोयले का महत्त्व—"लोहा और कोयला आधुनिक मशीन सभ्यता के आधार-स्तम्भ हैं।" यह कथन बिलकुल ठीक है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की उन्नति लोहे और कोयले के उत्पादन उपयोग पर निर्भर करती है। इसका उदाहरण पश्चिमी यूरोप तथा अमेरिका से लिया जा सकता है।

आज पश्चिमी यरोप तथा अमेरिका जो प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं इसका कारण लोहा व कोयला है। यूरोप में इंग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी औद्योगिक दृष्टि से बड़े उत्तम हैं। रूर को प्राय: औद्योगिक यूरोप का हृदय कहते हैं। यहाँ खानों के शीर्षों पर कोयले के ढेर, कोक भट्टियाँ, ढलाई के कारखाने, लोहा और इस्पात के संयन्त्र, स्टील रोलिंग कारखाने, रसायन संयंत्र, वस्त्र निर्माण के कारखाने आदि की भरमार मिलती है। पश्चिमी जर्मनी अपने मोटर उद्योग के लिए संसार दूसरा स्थान रखती है।

इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका लोहे और कोयले के बल पर ही सभ्यता का सिरमोर बना है। अमेरिका संसार में उद्योग-धन्धों में अग्रणी है। मोटरकार उद्योग में संसार में इसका प्रथम नम्बर है रेल मार्गों का यहाँ घना जाल फैला है। लोहे और कोयले के बल पर ही यहाँ के लोग चन्द्रमा तक पहुँचने में सफल रहे हैं। कोई ऐसा उद्योग नहीं है जो अमेरिका में उन्नति के मार्ग पर न हो।

इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि "लोहा और कोयला आधुनिक मशीन सभ्यता के आधार-स्तम्भ हैं।"

प्रश्न 5. खनिज सम्पदा को सुरक्षित रखने की आवश्यकता तथा सुरक्षित रखने की विधियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—खनिज सम्पदा को सुरक्षित रखने की आवश्यकता—खनिज सम्पदा को सुरक्षित रखने की बहुत आवश्यकता है। इसके कई कारण हैं। खनिज आधुनिक उद्योगों को आधार प्रदान करते हैं। जो औद्योगिक विकास, परिवहन और विभिन्न राष्ट्रों के मध्य व्यापार पर आधारित हैं। लोहा-इस्पात का प्रयोग सभी प्रकार के भवन निर्माण, मशीनों के निर्माण और रेलों

के डिब्बे, माल डिब्बे, स्वचालित गाड़ियों, पोतों तथा परिवहन के अन्य प्रकार के लिए होता है। अन्य धातुएँ ताँबा, मैंगनीज, सीसा, जस्ता आदि भी अनेक कार्यों के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं। खनिज ईंधन, स्थल, जल और वायु परिवहन के लिए शक्ति देते हैं। इसके लिए खनिज सम्पदा की सुरक्षा होनी बहुत जरूरी है।

खनिज सम्पदा को सुरक्षित रखने की विधियाँ—खनिज साधन सीमित हैं, निरन्तर खनन करते रहने से कुछ वर्षों पश्चात खनिज समाप्त हो जाते हैं। खनिजों को सुरक्षित रखने के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनाई जा सकती हैं।

खनिज साधनों की नई खोज की जाए जिससे खनिज पूर्ति होती रहे। खनिज भण्डारों का संरक्षण किया जाए। अयस्क के खनन करने और उससे माल तैयार करने में होनी वाली बरबादी को कम किया जाए। वैकल्पित साधनों का प्रयोग करके भी खनिजों को संरक्षित किया जा सकता है। जैसे—धातुओं के स्थान पर प्लास्टिक या लकड़ी। रद्दी माल का प्रयोग भी संरक्षण की एक विधि है। निम्न श्रेणी के अवस्कों का उपयोग करने के लिए नई विधियाँ निकाली जा सकती हैं।

प्रश्न 6. कोयला और खनिज तेल की तुलना में जल-विद्युत का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जल-विद्युत का महत्त्व—जल-विद्युत का विकास मुख्यतः प्रगतिशील औद्योगिक देशों में हुआ है। पश्चिमी यूरोप के देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका व कनाडा में इसकी काफी प्रगति हुई है। कोयला और खनिज तेल की तुलना में जल-विद्युत का महत्त्व अधिक है। इसके निम्नलिखित कारण हैं :

कोयला व खनिज तेल मंहगे खनिज हैं। इनकी तुलना में जल-विद्युत सस्ती है। सस्ती होने के कारण उद्योग-धन्धों के लिए यह बहुत लाभदायक है। कारखानों में जो माल तैयार होता है वह सस्ता होता है जबकि कोयला व खनिज तेल मंहगे होते हैं।

जल-विद्युत नाशवान नहीं है। इसका स्रोत निरन्तर प्राप्त होता रहता है। यह कभी समाप्त नहीं होता जबकि दूसरी ओर कोयला व खनिज तेल सीमित होते हैं और इनके समाप्त होने की पूरी सम्भावना है।

कोयला और खनिज तेलों की अपेक्षा जल-विद्युत पर कम श्रम लगता है।

प्रश्न 7. जल-विद्युत के विकास के महत्त्वपूर्ण कारकों पर प्रकाश डालो।

उत्तर—जल-विद्युत के विकास के दो महत्त्वपूर्ण कारक निम्नलिखत हैं :

1. **निरन्तर जल की पूर्ति**—जल-विद्युत के विकास के लिए निरन्तर जल

का मिलना बहुत आवश्यक है। यदि जल का मिलना बन्द हो जाएगा तो जल-विद्युत का विकास सम्भव नहीं है।

2. **भूमि का ढालू होना**—जल-विद्युत के लिए भूमि का ढालू होना बहुत जरूरी है। ढालू भूमि से जल को नीचे डाल कर टरबाइन द्वारा बिजली को तैयार किया जा सकता है। यदि भूमि ढालू नहीं होगी तो जल-विद्युत का विकास नहीं हो सकता।

जहाँ जलपूर्ति मौसमी होती है वहाँ नदियों पर बाँध बनाना बहुत आवश्यक है। जैसा कि हमारे देश में होता है। यहाँ नदियों पर बाँध बनाना अति आवश्यक है। महानदी पर हीराकुण्ड, सतलुज पर भाखड़ा तथा कोयना जैसे विशाल बाँधों का निर्माण बड़े-बड़े जलाशयों को बनाने के लिए किया गया है जिससे पानी की निरन्तर आपूर्ति हो सके। जल-विद्युत उत्पादन के लिए जल को काफी ऊँचाई से टरबन पर गिराया जाता है। इस प्रकार उत्पन्न शक्तियों को अत्यधिक शक्तिशाली संरक्षण लाइन द्वारा खपत क्षेत्रों को भेजा जाता है।

प्रश्न 8. तेल का विशेष रूप से संदर्भ देते हुए वर्तमान विश्व ऊर्जा संकट का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—वर्तमान विश्व ऊर्जा संकट—पैट्रोलियम या खनिज तेल अवसादी शैलों के स्तरों के मध्य के जैविक पदार्थ से प्राप्त होता है। संसार में तेल उपलब्धि की अपेक्षा माँग कहीं अधिक है, इसलिए सारे संसार में तेल की खोज जोरों पर है। तेल के उपलब्ध निक्षेपों का वितरण और उत्पादन बड़ा असमान है। संसार के भण्डार का लगभग 60 प्रतिशत दक्षिण-पश्चिम एशिया में फारस की खाड़ी के आस-पास मिलता है। किन्तु इन देशों में कम जन-संख्या और औद्योगिक विकास के अभाव से तेल की खपत बहुत नहीं है। इस क्षेत्र में प्रमुख तेल उत्पादक देश कुवेत, सऊदी अरब, ईरान, ईराक और संयुक्त अरब गणराज्य हैं। इन देशों का संसार के तेल निर्यात में 75 प्रतिशत भाग हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका तेल का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता देश है। यह अपने उपयोग का 30 प्रतिशत आयात करता है। जापान और यूरोप के पश्चिमी देश तेल के आयात पर पूर्णतः निर्भर हैं। सोवियत संघ और चीन तेल के मामले में आत्म-निर्भर हैं। पैट्रोलियम निर्यात करने वाले देशों ने हाल ही में तेल के मूल्य बढ़ा दिये हैं जिससे वर्तमान ऊर्जा संकट पैदा हो गया है। इसके कारण विश्वव्यापी मुद्रा स्फीति हुई है क्योंकि तेल एक महत्वपूर्ण ऊर्जा शक्ति साधन है और उद्योगों तथा परिवहन को गति देने के लिए उसे किसी भी मूल्य पर खरीदना होता है।

स्वयं करें और खोजें

प्रश्न (क) विश्व के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित खनिजों को दिखाइये (1) लौह अयस्क (2) कोयला (3) पेट्रोलियम।

उत्तर—इस प्रश्न को हल करने के लिए एटलस की सहायता लीजिए।

प्रश्न (ख) दैनिक जीवन में काम आने वाले विभिन्न खनिजों की एक लम्बी सूची तैयार करिये और उनका उपयोग समझिए।

उत्तर—दैनिक जीवन में काम आने वाले खनिजों की सूची—लोहा, बाक्साइट, मैंगनीज, ताँबा, सोना, अभ्रक, नमक, हीरे, जिप्सम, चूने का पत्थर, कोयला, खनिज तेल, चांदी, सीसा, जस्ता, टिन आदि।

खनिजों का उपयोग

1. **लोहा**—यह आधुनिक उद्योग-धन्धों की आधारशिला है। इसी पर वर्तमान मशीन युग आधारित है।

2. **बाक्साइट**—यह काफी उपयोगी धातु है। इससे अल्युमिनियम तैयार होता है। इससे वायुयान के ढांचे तैयार होते हैं। इससे बिजली के तार व बर्तन भी बनते हैं।

3. **मैंगनीज**—इसका प्रयोग रंग-रोगन बनाने के काम आता है।

4. **ताँबा**—प्राचीन काल से ही इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अब इसका अधिकतर प्रयोग बिजली का सामान बनाने तथा मिश्रित धातु जैसे कांसा व पीतल बनाने में होता है।

5. **सोना**—यह कीमती धातु है। यह एक स्थाई सम्पत्ति है। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्यांकन का साधन है। इसका आभूषण बनाने में भी प्रयोग किया जाता है।

6. **अभ्रक**—इसका प्रयोग विद्युत वस्तुओं में होता है।

7. **नमक**—यह भोजन और दवाइयों में काम आता है।

8. **हीरे**—इसका प्रयोग अधिकतर औद्योगिक कार्यों के लिए किया जाता है।

9. **जिप्सम**—यह उर्वरकों, सीमेंट और सल्फ्यूरिक एसिड के निर्माण में प्रयोग किया जाता है।

10. **चूने का पत्थर**—यह सीमेंट और खरल निर्माण के काम आता है।

11. **कोयला**—भारत में रेलों के काम आता है। उद्योग-धन्धों में भी काम आता है।

12. **खनिज तेल**—यह सबसे महत्त्वपूर्ण खनिज है। वाहन चलाने में इसका प्रयोग होता है।

13. **चांदी**—यह कीमती धातु है। दवाई बनाने व जेवर बनाने में काम आती है।

14. **शीशा और जस्ता**—शीशा लोहे की कली बनाने और रोगन के काम आता है। जस्ते का प्रयोग मुद्रण उद्योग में किया जाता है।

अध्याय 5

उद्योग-धन्धे

भूमिका : धातु, वन, कृषि और समुद्री उत्पादों को मनुष्य अपनी कार्य-कुशलता और तकनीकी ज्ञान की सहायता से उपयोगी बना लेता है। इस प्रकार के उद्योगों में संलग्न लोगों के व्यवसाय को गौण उद्योग कहते हैं। उद्योग से तात्पर्य है मनुष्य के प्रयत्न एवं कार्यकुशलता से की गई निर्माण क्रियाएँ। इस प्रकार उद्योगों को मोटे तौर से चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—(अ) घरेलू उद्योग (ब) ग्रामीण हस्तकला (स) कुटीर तथा विशिष्ट हस्तकला (द) आधुनिक फैक्ट्री उद्योग। जिसको तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—(1) लघु (2) मध्यम (3) भारी।

कुटीर उद्योग तथा विशिष्ट हस्तकलाओं के अन्तर्गत उपयोगी एवं सुन्दर वस्तुओं का निर्माण होता है। ये कारीगर एक विशेष जाति एवं घरों के होते है, जो परम्परागत रूप से इन कार्यों में लगे रहते हैं। इनका कार्यक्षेत्र घर-परिवार तथा जाति तक ही सीमित है। परन्तु इनके द्वारा निर्मित वस्तुएँ अपनी विशिष्टता के लिए संसार भर में प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक में चन्दन की लकड़ी का बना सामान तथा हाथी दाँत की नक्काशी के काम संसार भर में प्रसिद्ध हैं। महाराष्ट्र में पाइथन के जुलाहे और बनारस के साड़ी बनाने वाले संसार में प्रसिद्ध हैं। मुर्शिदाबाद पीतल के बर्तन बनाने के लिए प्रसिद्ध है। हमारे देश के प्रत्येक राज्य में इस प्रकार के विख्यात अनेक कला केन्द्र हैं।

हमें इस बात की ओर भी ध्यान देना है कि हाथकरघा उद्योग बड़े उद्योगों की अपेक्षा अधिक लोगों को रोजगार देता है। भारी मात्रा में हाथ की बनी हुई वस्तुएँ—जैसे ऊनी वस्त्र, रेशम, हाथी दांत, पीतल की बनी वस्तुएँ तथा कालीने भारी मात्रा में निर्यात कर सकते हैं क्योंकि इनका कलात्मक महत्त्व बहुत अधिक है। औद्योगिक दृष्टि से विकसित यूरोप के देश हस्तकला में संसार में छाए हुए हैं। उदाहरण के लिए इटली का 'बेनिशियन ग्लास' और

जर्मनी के 'ड्रेसडेन' चीनी मिट्टी के बर्तन विश्व-विख्यात हैं।

उद्योगों को हम कई भागों में बांट सकते हैं जैसे—निर्माण उद्योग, लघु उद्योग, मध्यम उद्योग व भारी उद्योग।

वे उद्योग जिनमें शक्ति का प्रयोग किया जाता है—जैसे कोयला, वाष्प विद्युत तथा प्राकृतिक तेल। इसमें कुशल कारीगर ही काम करते हैं। लघु उद्योग हल्की वस्तुओं का निर्माण करते हैं। यह उद्योग कुशल कारीगरों पर निर्भर करता है। मध्यम उद्योगों के अन्तर्गत कपड़ा उद्योग लिया जा सकता है। इस प्रकार के उद्योग में कुशल एवं दक्ष मानव श्रम, बड़ी मशीनों, अधिक से अधिक कच्चा माल, कुशल प्रबन्ध एवं पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता है। कच्चा माल मंगाने तथा तैयार माल को बेचने के लिए यातायात के सुगम साधनों की भी आवश्यकता होती है। भारी उद्योगों में भारी मशीनों का प्रयोग होता है तथा अधिक संख्या में श्रमिक कार्य करते हैं।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

प्रश्न (1) उद्योग का क्या अर्थ है ?

उत्तर—उद्योग—मनुष्य के प्रयत्न एवं कार्यकुशलता से की गई निर्माण क्रियाएँ उद्योग कहलाती हैं। धातु, वन, कृषि और समुद्री उत्पादों को मनुष्य उद्योगों द्वारा उपयोगी बना लेता है।

प्रश्न (2) उद्योगों को किन चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर—उद्योगों का वर्गीकरण—उद्योगों को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(अ) घरेलू उद्योग (ब) ग्रामीण हस्तकला (स) कुटीर तथा विशिष्ट हस्तकला (द) आधुनिक फैक्ट्री उद्योग।

प्रश्न (3) आधुनिक फैक्ट्री उद्योगों के तीन रूप कौन-से हैं ?

उत्तर—आधुनिक फैक्ट्री उद्योगों के निम्नलिखित तीन रूप हैं—

1. लघु 2. मध्यम 3. भारी।

प्रश्न (4) निर्माण उद्योग से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—निर्माण उद्योग का अर्थ—ये वे उद्योग होते हैं जिनमें शक्ति का प्रयोग किया जाता है, जैसे—कोयला, वाष्पविद्युत तथा प्राकृतिक तेल। इसमें कुशल कारीगर ही काम करते हैं।

प्रश्न (5) आधुनिक औद्योगीकरण में सबसे अधिक योग किस देश का है ?

उत्तर—आधुनिक औद्योगीकरण में सबसे अधिक योगदान—आधुनिक औद्योगीकरण में सबसे अधिक योग ग्रेट ब्रिटेन का है क्योंकि औद्योगिक क्रांति सबसे पहले यहीं हुई थी।

606 BVBSSMV

प्रश्न (6) लोहा इस्पात केन्द्र लोहा व कोयला के क्षेत्रों के निकट ही क्यों स्थित है ?

उत्तर—निकट होने के कारण—लोहा इस्पात उद्योग की अवस्थिति को तीन प्रमुख कारक विशेष रूप से प्रभावित करते हैं—(अ) कारखाने के स्थान पर कच्चे माल को एकत्रित करने का खर्च (ब) कच्चे माल को लोहा तथा इस्पात एवं उसके विशिष्ट रूपों में संसाधित करने का खर्च (स) तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने में यातायात की लागत। यही कारण है कि लोहा इस्पात कारखाने लोहे अयस्क तथा कोयले की खानों के निकट पाये जाते हैं न कि खनन स्थान पर।

प्रश्न (7) पोत निर्माण कार्य किन स्थानों पर सुविधापूर्वक किया जा सकता है ?

उत्तर—पोत निर्माण कार्य के लिए अनुकूल स्थान—बन्दरगाह गहरी नाव्य एश्चुरी पर स्थित होते हैं, जहाँ विस्तृत बन्दरगाह की पृष्ठभूमि, माल लादने और उतारने की सुविधाएँ हैं। जहाँ लोहा, इस्पात, इंजीनियरिंग उद्योग तथा अन्य कल पुर्जे बनने के कारखाने होते हैं, वहीं पर पोत निर्माण उद्योग स्थापित हो सकते हैं। जैसे—जापान, पश्चिमी यूरोप के देश, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ आदि।

प्रश्न (8) दो प्रमुख दुग्ध उत्पादक एवं निर्यातक देशों के नाम बताइये।

उत्तर—दो प्रमुख दुग्ध उत्पादक एवं निर्यातक देश—मक्खन और पनीर दुग्ध के प्रमुख उत्पाद हैं और ये उद्योग के रूप में विकसित हो रहे हैं। न्यूजीलैंड और डेनमार्क दो प्रमुख दुग्ध उत्पादक एवं निर्यातक देश हैं।

प्रश्न (9) भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

उत्तर—भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र—भारत के तीन प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं—

1. **पश्चिमी औद्योगिक क्षेत्र**—इसके अंतर्गत अहमदाबाद, बड़ोदा, बम्बई, पूना क्षेत्र आते हैं।

2. **पूर्वी औद्योगिक क्षेत्र**—इस क्षेत्र का विस्तार कलकत्ता में दक्षिणी-बिहार तक है।

3. **दक्षिणी क्षेत्र**—इस क्षेत्र के अंतर्गत बंगलौर, मदुराई तथा कोयम्बूटर आते हैं।

प्रश्न (10) दक्षिणी गोलार्ध में औद्योगिक विकास अधिक क्यों नहीं हुआ ?

उत्तर—औद्योगिक विकास अधिक न होने के कारण—दक्षिणी गोलार्ध में औद्योगिक विकास अधिक नहीं हो सका क्योंकि यहाँ पर कच्चे माल का

अभाव है, शक्ति के साधन कम हैं, यातायात के साधनों का अभाव है व खर्च भी अधिक आता है। बाजार भी बहुत दूरी पर है।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करिये :

(1) लघु उद्योग और भारी उद्योग।

उत्तर—

लघु उद्योग	भारी उद्योग
1. छापेखाने तथा बिजली के उपकरण बनाने के उद्योग इसके अन्तर्गत आते हैं।	1. इसके अन्तर्गत जमशेदपुर में लोहा-इस्पात जैसे निर्माण उद्योग आते हैं।
2. इनमें हल्की मशीनों का प्रयोग होता है।	2. इनमें भारी मशीनों का प्रयोग होता है।
3. इसमें कम श्रमिक काम करते हैं।	3. इसमें अधिक श्रमिक काम करते हैं।
4. इसके लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं होती।	4. इसके लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।

प्रश्न (2) कुटीर उद्योग तथा ग्रामीण उद्योग।

उत्तर—

कुटीर उद्योग	ग्रामीण उद्योग
1. इस उद्योग में एक ही परिवार के सदस्य अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करते हैं।	1. इसमें एक ही परिवार के सदस्य कार्य न करके विभिन्न परिवारों के सदस्य कार्य करते हैं।
2. यह कार्य घर पर ही किया जाता है।	2. यह कार्य गांव में या आस-पास किसी स्थान पर किया जाता है।
3. इसके अन्तर्गत उपयोगी एवं सुन्दर वस्तुओं का निर्माण होता है।	3. ये उद्योग साधारण स्तर के होते हैं।

प्रश्न (3) रसायन और पेट्रो रसायन।

उत्तर—

रसायन	पेट्रो-रसायन
1. यह आधुनिक उद्योगों की महत्त्वपूर्ण कड़ी है।	1. इसका पश्चिमी यूरोप के देशों तथा उत्तरी अमेरिका में अच्छा विकास हुआ है।
2. इसमें अनेक प्रकार के रसायनों और उपोत्पादों का प्रयोग, दवा-	2. पेट्रो-रसायन में खनिज तेल या उसे साफ करते समय अनेक प्रकार

इयों, उर्वरक, कीटनाशक और अनेक कृत्रिम वस्तुएँ बनाने में किया जाता है।	की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। जैसे मशीनी तेल, रासायनिक योगज, ग्रीस, मेंथल, प्लास्टिक, नाईलोन आदि।

प्रश्न (4) बाक्साइट और अल्युमिनियम—
उत्तर—

बाक्साइट	अल्युमिनियम
1. यह एक मूल्यवान धातु है जो अल्युमिनियम बनाने के काम आती है। इससे अल्युमिनियम सस्ती बिजली मिलने पर ही निकाला जा सकता है।	1. यह बाक्साइट से तैयार होता है। इस धातु का उपयोग वायुयानों और बिजली के तारों के निर्माण के लिए किया जाता है।

प्रश्न 3. उद्योग-धन्धों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का विवेचन कीजिए।

उत्तर—उद्योग-धन्धों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं :

1. **कच्चे माल की प्राप्ति**—कच्चा माल किसी भी उद्योग के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाला महत्त्वपूर्ण कारक है। बम्बई के आस-पास कपास मिलने के कारण वहाँ सूती वस्त्र उद्योग उन्नति पर है।

2. **शक्ति**—शक्ति के साधनों का होना भी अति आवश्यक है। इससे फैक्ट्री चलाई जाती है। उर्वरक उद्योग का नाँगल में स्थापित होना इसका एक ज्वलंत उदाहरण है क्योंकि भाखड़ा बाँध से पर्याप्त पानी और बिजली उपलब्ध है।

3. **सस्ता श्रम**—श्रम का सस्ता होना किसी भी उद्योग के लिए अति आवश्यक है। बिहार में कोयला उद्योग इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है। वहाँ पर मजदूर सस्ते मिल जाते हैं।

4. **पूंजी**—पूंजी के अभाव में किसी भी उद्योग को चलाना आसान नहीं है। अमेरिका, ब्रिटेन और रूस आदि देशों में जो इतने उद्योग-धन्धे पनपे हैं इसका कारण उन देशों का धनी होना है।

5. **यातायात के सुगम साधन**—यातायात के साधन सुगम होने पर आसानी से माल बाजारों में भेजा जा सकता है। कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

6. **कुशल प्रबन्ध**—किसी भी उद्योग को सुचारु रूप से चलाने के लिए

कुशल प्रबन्ध का होना बहुत जरूरी है।

परन्तु आज के युग में स्थानिक पक्ष में परिवर्तन हो रहे हैं और ये अधिक जटिल हो रहे हैं। साधारणतः बड़े उद्योगों को शहरों में लगाने के लिए हतोत्साहित किया जाता है। क्योंकि बड़े उद्योगों से वहाँ वायु-प्रदूषण तथा जल-प्रदूषण से नागरिकों को खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसलिए इस प्रकार के उद्योग नगरों से बाहर स्थापित किये जाते हैं। उद्योग समूह की स्थापना करना अधिक लाभप्रद है, जहाँ बिजली, पानी सामूहिक रूप से विभिन्न उद्योगों को दिये जाते हैं। इस प्रकार की औद्योगिक इकाइयों के समूह को 'औद्योगिक बस्ती' के नाम से पुकारते हैं। दिल्ली के निकट फरीदाबाद इसी प्रकार की बस्ती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि शक्ति, श्रम, पूंजी तथा बाजार की निकटता को ध्यान में रखते हुए उद्योगों की अवस्थिति निर्धारित की जाती है।

प्रश्न 4. "हस्तनिर्मित वस्तु के अधिकाधिक प्रयोग में जनहित है।" उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

उत्तर—हस्तनिर्मित वस्तु के प्रयोग का महत्त्व—घरेलू उद्योग में एक ही परिवार के सदस्य अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करते हैं। कार्य घर पर ही किया जाता है। महाराष्ट्र में बीड़ी बनाने का कार्य तथा तमिलनाडु में दियासलाई बनाने का काम घरेलू उद्योगों के उदाहरण हैं। भारतीय ग्रामों में परम्परागत कार्यों में कुम्हार, बढ़ई, लुहार और मोची सिद्धस्त होते हैं। ये उद्योग ग्रामीण हस्तकला में आते हैं। आज भी ये लोग ग्रामीण समाज की आवश्यकता पूर्ति के लिए कार्यरत हैं।

विशिष्ट हस्तकलाओं के अंतर्गत उपयोगी एवं सुन्दर वस्तुओं का निर्माण होता है। ये कारीगर एक विशेष जाति एवं घरों के होते हैं, जो परम्परागत रूप से इन कार्यों में लगे रहते हैं। इनका कार्यक्षेत्र घर, परिवार तथा जाति तक ही सीमित है। परन्तु इनके द्वारा निर्मित वस्तुएँ अपनी विशिष्टता के लिए संसार भर में प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक में चन्दन की लकड़ी का बना सामान तथा हाथी दाँत की नक्काशी के काम संसार भर में प्रसिद्ध हैं। महाराष्ट्र में पाइथन के जुलाहे और बनारस के साड़ी वाले संसार में प्रसिद्ध हैं।

ग्रामीण लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने वालों का विशेष महत्त्व है। जुलाहे और तेली अपने गाँव वालों व पास-पड़ोस के क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। गाँधीजी ने भी हस्तनिर्मित वस्तुओं के उपयोग पर अधिक बल दिया था।

हस्तनिर्मित वस्तुओं के अधिकाधिक प्रयोग में जनहित है। हाथकरघा उद्योग बड़े उद्योगों की अपेक्षा अधिक लोगों को रोजगार देता है। भारी

मात्रा में हाथ की बनी हुई वस्तुएँ—जैसे ऊनी वस्त्र, रेशम, हाथी दाँत, पीतल की बनी वस्तुएँ तथा कालीनें भारी मात्रा में निर्यात की जाती हैं। हस्तकला का स्थानीय अर्थव्यवस्था में विशेष महत्त्व है। उसके अतिरिक्त औद्योगिक दृष्टि से विकसित यूरोप के देश हस्तकला में संसार में छाये हुए हैं। उदाहरण के लिए इटली का 'वोनिशियन ग्लास' और जर्मनी के 'ड्रेसडेन' चीनी मिट्टी के बर्तन विश्व-विख्यात है।

प्रश्न 5. "उद्योगों की विविधता और उनके विकास द्वारा कृषि का आधुनिकीकरण कैसे होता है ?" विवेचन करिए।

उत्तर—उद्योगों की विविधता और उनका आधुनिकीकरण—कृषि के आधुनिकीकरण से पहले कृषि का रूप कुछ दूसरा था। विविध प्रकार के उद्योग प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में विकसित रहे हैं। उद्योगों की विविधता और उनका विकास कृषि के आधुनिकीकरण में बड़ा सहायक हुआ है। जैसे-जैसे समय बीतता चला गया वैसे-वैसे कच्चे माल से विविध प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाने लगीं। उसी के अनुरूप कृषि में भी परिवर्तन करना पड़ा।

कृषीय कच्चे पदार्थों पर निर्भर उद्योग—कृषि पर आधारित उद्योगों का महत्त्व अधिक है। वे हमारी अर्थ-व्यवस्था में ही प्रमुख स्थान नहीं रखते वरन् देश के करोड़ों लोगों को जीविका प्रदान करते हैं। वस्त्र, चीनी, पेय-पदार्थ, वनस्पति तेल, तम्बाकू, रबड़, कपास तथा डेरी इसी वर्ग के प्रमुख उद्योग हैं।

चरखे और करघे का प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। आज भी ग्रामों में लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है। आजकल सूती कपड़े की मिलें हैं जिनमें सुन्दर तथा कई प्रकार का कपड़ा तैयार होता है। अतः उसी के अनुसार कपास की भी कई किस्में तैयार की जाने लगी हैं। इसी प्रकार पटसन के वस्त्र, ऊनी वस्त्र, रेशमी वस्त्र बनने लगे हैं। इनसे कृषि का रूप भी बदला है।

इसी का विकसित रूप अब कृत्रिम वस्त्रों के रूप में हमारे सामने आया है। जैसे—रेयन, नाइलोन, टैरीन व डैकरोन आदि।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि उद्योगों की विविधता और उनके विकास द्वारा कृषि का आधुनिकीकरण होता है।

प्रश्न 6. उद्योगों का विकेन्द्रीकरण एक अनिवार्यता क्यों है ?

उत्तर—उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की अनिवार्यता—"उद्योगों का विकेन्द्रीकरण एक अनिवार्यता है।" यह कथन बिलकुल ठीक है। जिन उद्योगों का विकेन्द्रीकरण नहीं है वहाँ उद्योगों की दशा शोचनीय है। श्रमिकों को उचित

वेतन न मिलने के कारण वे मन लगाकर कार्य नहीं कर पाते। इसका प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है। पूंजी पर कुछ ही लोगों का स्वामित्व होता है। इससे काले धन को बढ़ावा मिलता है। देश की प्रगति में बाधा पड़ती है। देश की अर्थ-व्यवस्था पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः उद्योगों का विकेन्द्रीकरण अति आवश्यक है। इससे श्रमिकों की दशा में सुधार होगा। उन्हें उचित वेतन मिलेगा। कार्य करने के घण्टे निश्चित होंगे। अन्य सुविधाएँ उनको मिलेंगी। इससे उनका जीवन स्तर ऊँचा उठेगा। उत्पादन में वृद्धि होगी।

दूसरे माल की बिक्री से देश की अर्थव्यवस्था उन्नत होगी इससे देश की आय बढ़ेगी। कार्य सुचारु रूप से चलेगा।

अमीर-गरीब के बीच की बढ़ती हुई खाई को रोका जा सकेगा। पूंजीपति काला धन इकट्ठा नहीं कर पायेंगे। मूल्य वृद्धि को रोका जा सकेगा। अनुचित ढंग से माल का संचय नहीं किया जा सकेगा।

अतः उद्योगों का विकेन्द्रीकरण एक अनिवार्यता है।

प्रश्न 7. उत्तरी-पश्चिमी यूरोप में उद्योगों के भारी विकास के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—उत्तरी-पश्चिमी यूरोप में उद्योगों का भारी विकास—उत्तरी-पश्चिमी यूरोप में उद्योग-धन्धे बड़ी उन्नति पर हैं। जिन देशों में ये उद्योग धन्धे उन्नति पर हैं उनके नाम निम्नलिखित हैं :

यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम तथा नीदरलैण्ड।

इन देशों में उद्योगों के भारी विकास के कुछ विशेष कारण हैं :

1. जलवायु—इन देशों की जलवायु मानव श्रम के अनुकूल है। यहाँ पर कार्य करने में आदमी को थकावट प्रतीत नहीं होती। अतः अधिक मन लगाकर कार्य होता है।

2. कच्चा माल—कच्चा माल उद्योग-धन्धे चलाने के लिए अति आवश्यक है। यहाँ के लोगों ने पृथ्वी के भीतर छिपे हुए कोयले और लोहे के विशाल भंडारों का पता लगाया। इस प्रकार से धरती के भीतरी भाग भी इन लोगों के लिए अति दयालु और उदार रहे। इन दोनों खनिजों ने उत्तरी-पश्चिमी यूरोप को अपने छोटे-बड़े उद्योगों को विकसित करने में सहायता दी।

3. जल की प्राप्ति—यहाँ के लोगों को प्रकृति ने एक और उपहार प्रदान किया है। वह है—जल, जिसका उपयोग जल-शक्ति के विकास, अतः स्थलीय परिवहन और सिंचाई के लिए बड़ी बुद्धिमानी से किया गया है। वास्तव में बहते हुए जल से शक्ति प्राप्त करने और उसे मानव की सेवा में लगाने का कार्य सर्वप्रथम यूरोप वालों ने ही किया था।

4. **सस्ते श्रमिक**—यहाँ पर श्रमिक भी सस्ते मिल जाते हैं जिससे वस्तुओं की कीमतें नहीं बढ़ पातीं।

5. **कुशल नाविक**—यहाँ के लोग कुशल नाविक रहे हैं उन्होंने अपने साहस के बल पर नवीन देशों की खोज की। ये देश उनके लिए बाजार के रूप में काम आये। यहां पर उनके माल की खपत होनी शुरू हो गई।

6. **पत्तन**—यहाँ पर अनेक पत्तन हैं। इनके किनारे बहुत से नगर हैं। इन्हें पत्तननगर कहा जाता है। व्यापारिक दृष्टि से इनका बड़ा महत्त्व है। डेसलोडर्फ (पश्चिमी जर्मनी) औद्योगिक नगर है। व्यापारिक नगरों में पेरिस तथा लन्दन आते हैं। आमस्टर्डम तथा हैम्बर्ग पत्तननगर हैं।

7. **यातायात के उत्तम साधन**—यहाँ की औद्योगिक बस्तियाँ उत्तम सड़कों द्वारा पत्तनों व नगरों से जुड़ी हैं।

इन्हीं सब कारणों से उत्तरी पश्चिमी यूरोप में उद्योगों का भारी विकास हुआ है।

प्रश्न 8. लोहा-इस्पात तथा सूती वस्त्र उद्योग का संक्षेप में उल्लेख करो।

उत्तर—लोहा-इस्पात उद्योग—लोहा और इस्पात उद्योग की अवस्थिति को तीन प्रमुख कारक विशेष रूप से प्रभावित करते हैं—(अ) कारखाने के स्थान पर कच्चे माल को एकत्रित करने का खर्च। (ब) कच्चे माल को लोहा तथा इस्पात एवं उसके विशिष्ट रूपों में संशोधित करने का खर्च। (स) तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने की लागत। टाटा आयरन एण्ड स्टील प्लांट जमशेदपुर इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

प्रमुख उत्पादक—संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ लोहा-इस्पात के प्रमुख उत्पादक देश हैं। पश्चिमी जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, जापान, चीन तथा फ्रांस अन्य महत्त्वपूर्ण उत्पादक देश हैं। हमारे देश में लगभग 70 लाख मीट्रिक टन इस्पात प्रतिवर्ष तैयार किया जाता है।

लोहा-इस्पात उद्योग का वितरण—संयुक्त राज्य अमेरिका में लोहा एवं इस्पात उद्योग मुख्यतः महान झीलों के पास, उत्तरी अपलेशियन क्षेत्र तथा दक्षिण में मध्य अटलांटिक तटीय मैदानों में केन्द्रित हैं। सोवियत संघ में यूक्रेन की डॉन घाटी, यूराल पर्वत के दक्षिणी क्षेत्र, पश्चिमी साइबेरिया की टॉम घाटी तथा मास्को लेनिनग्राद लोहा-इस्पात के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं। पश्चिमी जर्मनी का इस्पात उत्पादन में विश्व में चौथा स्थान है। यूनाइटेड किंगडम लोहा-इस्पात उत्पन्न करने वाला प्रमुख देश है। जापान का इस उद्योग में तीसरा स्थान है। भारत में कई लोहा-इस्पात केन्द्र हैं।

सूती वस्त्र उद्योग—सर्वप्रथम सूती वस्त्र उद्योग लिवरपूल मैनचेस्टर क्षेत्र (लंकाशायर) में स्थापित हुआ था। आज से 50 वर्ष पूर्व यूनाइटेड किंगडम

सूती वस्त्र उद्योग में अग्रणी था। आज संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, जापान तथा अन्य देशों ने भी महत्त्वपूर्ण प्रगति की है। इसमें भारत का विशेष महत्त्व है।

यूरोप के कई देशों में सूती कपड़े की मिले हैं परन्तु उन देशों में कपास पैदा नहीं होती है। इसके लिए वे मिस्र से कपास का आयात करते हैं। यहाँ पर सूती वस्त्रों की स्थानीय खपत अधिक है। इस कारण यहाँ पर सूती वस्त्र उद्योग पनपे हैं।

भारत में 1854 में भारतीय पूंजी से बम्बई में सबसे पहली सूती मिल स्थापित की गई थी। यहाँ सूती वस्त्र उद्योग के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बम्बई, अहमदाबाद, बड़ौदा, शोलापुर, इन्दौर, ग्वालियर, दिल्ली, कानपुर, कलकत्ता, मदुराई, बंगलौर तथा मद्रास हैं। इसके अतिरिक्त भारत की एक तिहाई वस्त्रों की आवश्यकता हाथकरघों से पूरी होती है।

प्रश्न 9. इंजीनियरिंग उद्योग का महत्त्व स्पष्ट करते हुए भारत में इंजीनियरिंग उद्योग के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—इंजीनियरिंग उद्योग का महत्त्व—ये उद्योग भारी मशीनों से लेकर छोटे-छोटे औजार तक तैयार करते हैं। यह आधुनिक औद्योगिक उत्पादन की आधारशिला हैं। इस प्रकार के उद्योग अच्छी किस्म के लोह-इस्पात पर्याप्त शक्ति की आपूर्त्ति तथा कुशल श्रमिकों के ऊपर निर्भर करते हैं। इनके कारण अनेक औद्योगिक बस्तियों का निर्माण हुआ है। इन उद्योगों के विकास से कोई भी देश आर्थिक, सैनिक व अन्य दशाओं में मजबूत हो सकता है। आज संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, सोवियत संघ और जापान इंजीनियरिंग उद्योगों के कारण ही अपना विकास कर सके हैं।

भारत में इंजीनियरिंग उद्योग का विकास—भारत ने इस क्षेत्र में बड़ी प्रगति की है। नैनी, राँची और तुंगभद्रा में इस्पात सम्बन्धी उपकरण तैयार होते हैं। विशाखापटनम में उर्वरक और रसायनिक उद्योगों की मशीनें बन रही हैं। बंगलौर, पूना, पिंजौर, कलामासेरी व हैदराबाद में मशीनों के औजार बनाये जाते हैं। भारी बिजली का सामान भी भारत में कई स्थानों पर तैयार होता है। बिजली के केबल्स रूपनारायणपुर (पश्चिमी बंगाल) में तैयार किये जाते हैं। कलकत्ता तथा दुर्गापुर में यथार्थमापी यंत्र एवं शीशे के यन्त्र बनाये जाते हैं।

भारत के प्रत्येक बड़े नगर में छोटे-छोटे कल-पुर्जे एवं इंजीनियरिंग का सामान बनाया जा रहा है। इंजीनियरिंग उद्योग का अपने देश में इतना विकास हो गया है कि हम अब इन वस्तुओं का निर्यात भी करते हैं।

स्वयं करें और खोजें

प्रश्न 1. निम्नलिखित का औद्योगीकरण किस प्रकार तथा कहाँ तक प्रभावित करता है ?

उत्तर—(क) नगरीकरण—औद्योगीकरण होने से नगरीकरण होता है। इसका कारण यह है कि उद्योग-धन्धे स्थापित होने से वहाँ पर बहुत से लोगों को काम मिलता है। जैसे—इंजीनियर, श्रमिक, लिपिक आदि। ये लोग औद्योगिक स्थानों के पास ही बसाये जाते हैं जिससे कि समय की बचत हो सके। इस प्रकार औद्योगीकरण नगरीकरण में सहायता देता है।

(ख) वायु प्रदूषण—औद्योगीकरण वायु प्रदूषण को बढ़ावा देता है। फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषण में सहायक होता है।

(ग) जल प्रदूषण—औद्योगीकरण से जल प्रदूषण भी होता है। जैसे—चमड़े के कारखाने जहाँ पर होते हैं वहाँ की नदियों का पानी चमड़े के रंग के कारण लाल हो जाता है। इससे जल प्रदूषण होता है।

(घ) बेरोजगार—औद्योगीकरण बेरोजगार लोगों को रोजगार देता है। उद्योगों में बहुत से लोगों को काम मिलता है। इससे उनकी जीविका चलती है।

(ङ.) जातिरहित समाज—औद्योगीकरण जातिरहित समाज को बढ़ावा देता है। जिन स्थानों पर औद्योगीकरण होता है वहाँ पर विभिन्न प्रान्तों व जातियों के व्यक्ति आकर रहने लगते हैं। एक स्थान पर रहने के कारण जाति-रहित समाज को बढ़ावा मिलता है।

प्रश्न 2. भारत में वे क्षेत्र मालूम करिए जहाँ औद्योगीकरण सबसे कम और सबसे अधिक हुआ है ? इसके कारण जानने की कोशिश करिये। इस क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने के लिए आपकी राय में क्या-क्या कदम उठाने चाहिएँ ? मालूम करिये कि भारत सरकार ने भी इस दिशा में क्या ठोस कदम उठाये हैं ?

उत्तर—भारत में सबसे अधिक औद्योगीकरण—भारत में सबसे अधिक औद्योगीकरण बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मद्रास, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में है। इसका कारण यह है कि इन प्रदेशों में कच्चा माल बहुत बड़ी मात्रा में मिलता है। यातायात की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। मजदूर भी सस्ते मिल जाते हैं।

भारत में सबसे कम औद्योगीकरण—भारत में सबसे कम औद्योगीकरण निम्नलिखित प्रदेशों में हुआ है :

असम, नागालैण्ड, मिजोरम, राजस्थान, मणिपुर आदि। इसका कारण यह है कि इन स्थानों पर कच्चे माल का अभाव है। यातायात के साधन ठीक

नहीं है। फैक्ट्री लगाने के लिए उचित स्थान नहीं हैं।

क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने के प्रयास—इस क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने के लिए कुछ प्रयास किये जा सकते हैं। जैसे—सड़कों का निर्माण किया जाना चाहिए, वन आदि को साफ करके मैदान बनाने चाहिएँ जहाँ पर फैक्ट्रियाँ लगाई जा सकें। बिजली का उचित प्रबन्ध होना भी जरूरी है।

भारत सरकार द्वारा उठाये गये कदम—इस क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने तथा औद्योगिक विकास करने के लिए भारत सरकार ने कई ठोस कदम उठाये हैं।

नगरों व ग्रामों को सड़कों द्वारा जोड़ा गया है। इससे यातायात में सुविधा मिली है। ग्राम-ग्राम में बिजली पहुँचाई जा रही है। इससे कारखानों को चलाने में सुविधा मिली है। छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसके लिए भारत सरकार ने सस्ती ब्याज दर पर रुपया उधार देना शुरू किया है। इसके अतिरिक्त सरकार रुपये-पैसे से भी मदद करती है।

अध्याय 6

यातायात और संचार

भूमिका : आधुनिक समय में यातायात के साधनों का भारी महत्त्व है। ये साधन प्राचीन साधनों की अपेक्षा अधिक तीव्रगामी हैं। इनसे समय की भारी बचत होती है। ये अधिक यात्री व माल ढोने में असमर्थ हैं। गति तथा वहन की क्षमता दोनों ही यातायात की आवश्यका को पूरा करते हैं। यातायात के साधनों से आर्थिक क्रिया-कलापों को बढ़ावा मिलता है। आधुनिक उद्योगों में इनका महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। यातायात के विकसित साधन किसी देश अथवा क्षेत्र के लिए कृषीय और औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार सुलभ कराते हैं। जिन देशों में वस्तुओं का अभाव होता है, वे इन वस्तुओं का आयात कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर लेते हैं।

यातायात के साधनों का भली प्रकार से विकास कर हर क्षेत्र अपने प्राकृतिक साधनों और मानव शक्ति का अधिकाधिक सदुपयोग कर सकता है। इस प्रकार यातायात के विकसित साधन किसी देश के उच्च आर्थिक

विकास का सूचांक बनते हैं। सड़कें, रेलमार्ग, जलमार्ग, वायुमार्ग यातायात के प्रमुख साधन हैं।

सड़कों पर बैलगाड़ी, ऊँट गाड़ी, घोड़ा गाड़ी तथा मोटर गाड़ियाँ चलाई जाती हैं। मोटर तथा ट्रक इन मार्गों का अधिक उपयोग करते हैं। यूरोप के देश तथा संयुक्त राज्य अमेरिका इस क्षेत्र में आगे हैं। ट्रांसकनाडियन महामार्ग, अलास्कन महामार्ग आदि विश्व-विख्यात महामार्ग हैं।

भारत में सड़कों का सबसे घना जाल तमिलनाडु व केरल के तटीय क्षेत्रों, केरल, पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी बंगाल में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश तथा बिहार में भी सड़कों की पर्याप्त सुविधाएँ हैं। देश के आन्तरिक भागों में सड़कों का विस्तार कम है।

रेलमार्ग उद्योग-धन्धों के विकास की आधारशिला है। वैसे रेलमार्ग यातायात का एक महंगा साधन है। कनाडा तथा सोवियत संघ में रेलमार्गों के कारण ही नई भूमियों को विकासित किया जा सका है। ये मार्ग सड़कों के जाल, आर्थिक विकास का स्तर तथा जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करते हैं। रेलों का घना जाल विकसित औद्योगिक क्षेत्रों में पाया जाता है। पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में रेलों का सबसे घना जाल है। संसार के सबसे अधिक लम्बे रेलमार्ग निम्नलिखित हैं :

(1) ट्रान्स-साइबेरियन रेलमार्ग जो लेनिनग्राद से ब्लाडीवोस्टक बन्दरगाह को मिलाता है। (2) कनाडियन पैसीफिक तथा कनाडियन नेशनल—ये कनाडा के दो प्रधान रेलमार्ग हैं जो कनाडा के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों को आपस में मिलाते हैं।

भारत में रेलों का जाल गंगा के मैदान में सबसे अधिक है। हमारे प्रमुख रेलमार्ग बन्दरगाहों से जुड़े हैं।

सदानीरा गहरी नाव्य नदियाँ, गहरी झीलें तथा नाव्य नहरें अन्तस्थलीय जलमार्ग के अंतर्गत आती हैं। अन्तस्थलीय जलमार्गों का सस्ता होना उसका सबसे बड़ा लाभ है। ये मार्ग भारी सामान ढोने के लिए उपयुक्त हैं।

संसार का अधिकांश व्यापार समुद्री मार्गों से होता है। ये मार्ग मौसम तथा प्लावी हिमखंडों जैसे प्राकृतिक व्यवधानों से तुलनात्मक रूप से मुक्त होते हैं।

तटीय जलमार्गों का स्थानीय महत्व है। सामुद्रिक देश जैसे—यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा भूमध्य सागरीय देश इस प्रकार के जलमार्ग का पूरा उपयोग करते हैं। कोंकण तथा मलाबार तटों पर तटीय जल परिवहन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

बन्दरगाहों पर विभिन्न प्रकार की पोताश्रय सम्बन्धी सुविधाएँ सुलभ

होती है। रेल व सड़कों द्वारा जुड़े होने के साथ-साथ यहाँ प्रबन्ध तथा व्यापार सम्बन्धी समुचित व्यवस्था होती है। बन्दरगाह नगरों का रूप ले लेते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वायुपरिवहन में भारी प्रगति हुई है। इसने पृथ्वी को ओर भी छोटा बना दिया है।

प्रस्तुत पाठ में इन सभी बातों पर प्रकाश डाला गया है।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(1) यातायात के साधनों से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—यातायात के साधनों का अर्थ—यातायात के साधन वे संगठन हैं जो व्यक्ति, वस्तुओं और समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने में सहायक होते हैं। यदि कृषि और उद्योग-धन्धे किसी देश के आर्थिक जीवन का शरीर और हड्डियाँ मानी जाती हैं तो यातायात और संचार उस आर्थिक ढांचे की स्नायुप्रणाली का स्थान रखते हैं।

प्रश्न (2) संचार के साधनों से आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—संचार के साधनों से अभिप्राय—ऐसे साधन जो हमारे समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते हैं, संचार के साधन कहलाते हैं। जैसे—डाक, तार, टेलीफोन आदि। व्यापार, कृषि और औद्योगिक उन्नति में संचार के साधनों का विशेष महत्त्व है। इनके अभाव में आर्थिक संकट एवं अकाल पड़ने की सम्भावना रहती है। शासन व्यवस्था एवं देश की सुरक्षा में इनका बहुत बड़ा हाथ है।

प्रश्न (3) सड़क मार्ग महंगा होते हुए भी महत्त्वपूर्ण क्यों है ?

उत्तर—सड़क मार्ग का महत्त्व—सड़कों के अंतर्गत पगडण्डी से लेकर आधुनिक मोटर मार्ग आते हैं। सड़क मार्ग महंगे होते हुए भी महत्त्वपूर्ण हैं। इसका कारण यह है कि इनकी देखभाल आसानी से हो सकती है। सड़कों के द्वारा सामान व यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर जहाँ चाहे वहाँ लाये ले जाए जा सकते है। इनके द्वारा जल्दी पहुँचा जा सकता है। सड़कें पहाड़ी भागों पर भी बनाई जा सकती हैं।

प्रश्न (4) रेलमार्ग की प्रमुख दो विशेषताएँ कौन-सी हैं ?

उत्तर—रेलमार्ग की प्रमुख विशेषताएँ—

1. दूर स्थित स्थानों के बीच द्रुत गति से अधिक भारी, ज्यादा जगह घेरने, माल ढोने तथा यात्रियों को लाने लेजाने में अन्य साधनों की अपेक्षा रेलें अधिक उपयोगी होती हैं।

2. युद्ध-काल में फौजों और अकाल के दिनों में भोजन सामग्री को उचित समय और बड़ी मात्रा में पहुँचाने का काम रेलों द्वारा ही सम्भव है।

प्रश्न (5) जलमार्ग की दो प्रमुख विशेषताएँ बताओ।

उत्तर—जलमार्ग की दो प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. जलमार्ग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की जान है। पनामा और स्वज के जलमार्ग बहुत महत्त्वपूर्ण है। सिंगापुर का जलमार्ग अपनी ही किस्म का अद्भुत है। संसार का अधिकांश व्यापार जलमार्गों द्वारा ही होता है। भारत में नौकाओं द्वारा नदियों में तथा बादबानी जहाजों द्वारा समुद्रों में यातायात प्राचीन काल से ही चलता था। 19वीं शताब्दी में समुद्री मार्ग पश्चिमी व्यापारियों ने सम्भाल लिए।

2. ये जलमार्ग भारी सामान ढोने के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न (6) वायुमार्ग की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

उत्तर—वायुमार्ग की दो प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. वायुमार्ग ने पृथ्वी को और भी छोटा बना दिया है। स्थल या जल मार्गों द्वारा जो दूरी पहले महीनों में तय की जाती थी अब वह वायुमार्ग द्वारा कुछ ही घण्टों में तय की जा सकती है। यदि इन्हें उतरने की सुविधाएँ प्राप्त हों तो ये संसार के गुप्त से गुप्त व दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में पहुँच सकते हैं।

2. युद्ध के समय वायुमार्ग द्वारा पहाड़ों में छिपे हुए सैनिकों को रसद भेजी जा सकती है। शत्रु के गुप्त ठिकानों को देखा जा सकता है।

प्रश्न (7) अन्तस्थलीय जलमार्ग से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—अन्तस्थलीय जलमार्ग—सदानीरा गहरी नाव्य नदियाँ, गहरी झीलें तथा नाव्य नहरें अन्तस्थलीय जलमार्ग के अन्तर्गत आती हैं। ये जलमार्ग बड़े सस्ते होते हैं। इनका बनाना बड़ा खर्चीला है तथा इनके बनाने में समय भी बड़ा लगता है। ये भारी सामान ढोने के लिए बड़े उपयुक्त हैं।

सबसे उत्तम अन्तस्थलीय जल मार्ग—पश्चिमी यूरोप के देश, यूरोपीय सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में पाये जाते हैं। भारत में ये मार्ग सीमित हैं।

प्रश्न (8) वायुमार्ग को किन तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर—वायुमार्ग को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

1. अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग 2. राष्ट्रीय वायुमार्ग 3. क्षेत्रीय वायुमार्ग।

अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग—ये वे वायुमार्ग हैं जिनका सम्बन्ध विश्व के अन्य देशों से है। जैसे—बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता तथा कुछ हद तक मद्रास ऐसे भारतीय वायुसेना के केन्द्र हैं जिनका सम्बन्ध विश्व के विभिन्न बड़े

नगरों से है।

2. **राष्ट्रीय वायुमार्ग**—यह देश के विभिन्न नगरों को आपस में जोडता है। यह भारी संख्या में यात्री तथा माल ढोने के लिए प्रसिद्ध है।

3. **क्षेत्रीय वायुमार्ग**—इन मार्गों का सम्बन्ध किसी न किसी हवाई अड्डे से होता है। यह सेवा उन क्षेत्रों के लिए है जहाँ पहुँचना कठिन होता है।

प्रश्न (9) जलमार्ग को किन तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है ?

उत्तर—जलमार्ग को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

1. अन्तस्थलीय जलमार्ग 2. पारमहासागरीय जलमार्ग 3. तटीय समुद्रीमार्ग।

1. **अन्तस्थलीय जलमार्ग**—सदानीरा गहरी नाव्य नदियाँ, गहरी झीलें तथा नाव्य नहरें अन्तस्थलीय जलमार्ग के अन्तर्गत आती हैं।

2. **पारमहासागरीय जलमार्ग**—संसार का अधिकाँश व्यापार इसी मार्ग द्वारा होता है।

3. **तटीय समुद्रमार्ग**—ये छोटे-छोटे बन्दरगाहों तथा एश्चुअरी की सेवा करते हैं।

प्रश्न (10) संसार के सबसे अधिक लम्बे तीन रेलमार्गों के नाम बताइये।

उत्तर—संसार के सबसे लम्बे तीन रेल मार्ग—

1. **ट्रान्स-साईबेरियन रेलमार्ग**—जो सोवियत संघ के वल्टिक सागर के लेनिनग्राद से प्रशान्त महासागर पर स्थित ब्लाडीवोस्टक बन्दरगाह को मिलाता है।

2. **कनाडियन पैसीफिक तथा कनाडियन नेशनल**—ये कनाडा के दो प्रधान रेलमार्ग हैं जो कनाडा के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों को आपस में मिलाते हैं।

3. **ट्रान्स एडीयन रेलमार्ग**—यह अर्जेन्टाइना के ब्यूनसआर्यस नगर को चिली के वालपरेजो नगर से मिलता है।

प्रश्न (11) भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में वायु यातायात क्यों अधिक महत्त्वपूर्ण है ?

उत्तर—भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में वायु यातायात का महत्त्व :

भारत का उत्तरी-पूर्वी भाग पर्वतीय है और अधिक वर्षा होने के कारण घने वनों से ढका है। इसलिए इस क्षेत्र में रेलमार्ग या सड़कें बनाना कठिन है। दूसरे इसके द्वारा हमारी सीमा की पहरेदारी करने वाले सेना के जवानों को बराबर रसद पहुंचाने में सहायता मिलती है।

इन कारणों से इस क्षेत्र में वाय यातायात का महत्त्व अधिक है।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करो :

प्रश्न (1) बन्दरगाह और पोताश्रय।
उत्तर—

बन्दरगाह	पोताश्रय
1. बन्दरगाहों पर विभिन्न प्रकार की पोताश्रय सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।	1. पोताश्रय बन्दरगाह का वह भाग है जहाँ जहाजों पर सामान चढ़ाने-उतारने तथा संग्रहण सम्बन्धी सुविधाएँ होती हैं।
2. रेल तथा सड़कों द्वारा जुड़े होने के साथ-साथ यहाँ व्यापार सम्बन्धी समुचित व्यवस्था होती है। इसीलिए बन्दरगाह नगरों का रूप ले लेते हैं।	2. अच्छे पोताश्रयों पर जहाज लंगर डालकर सुरक्षित रूप से खड़े हो सकते हैं। न्यूयार्क जैसे प्राकृतिक पोताश्रय में जहाँ सामान चढ़ाने व उतारने की विकसित सुविधाएं हैं। वहाँ बन्दरगाह के निकटवर्ती क्षेत्रों का भारी विकास हुआ है।
3. प्राकृतिक बन्दरगाहों को मानव निर्मित रचनाओं द्वारा काफी सुधारा जा सकता है।	3. जहाँ प्राकृतिक सुविधा नहीं होती वहाँ जहाजों को लहरों से सुरक्षित रखने के लिए कृत्रिम तटबंधों का निर्माण कर पोताश्रय सम्बन्धी सुविधाओं का विकास करना पड़ता है।
4. बन्दरगाहों को गादमुक्त रखा जाता है। इससे सामान को उतारने व चढ़ाने में आसानी होती है।	4. सभी प्रकार के पोताश्रयों की देख-रेख करनी पड़ती है जो बहुत खर्चीली होती है।

प्रश्न (2) प्राकृतिक बन्दरगाह तथा कृत्रिम बन्दरगाह।
उत्तर—

प्राकृतिक बन्दरगाह	कृत्रिम बन्दरगाह
1. यह वह बन्दरगाह होता है जो प्रकृति द्वारा बना होता है।	1. इस बन्दरगाह का मानव द्वारा निर्माण होता है। जैसे भारत का मंगलौर बन्दरगाह।
2. प्राकृतिक बन्दरगाह देश के लिए बड़े लाभदायक होते हैं क्योंकि ये अधिक सुरक्षित होते हैं।	2. बन्दरगाहों का निर्माण करने में काफी रुपया खर्च करना पड़ता है।

प्रश्न (3) अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग और राष्ट्रीय वायुमार्ग ।

उत्तर—

अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग	राष्ट्रीय वायुमार्ग
1. इनका सम्बन्ध विश्व के विभिन्न बड़े नगरों से होता है । जैसे लंदन, बोन तथा न्यूयार्क नगरों से भारतीय नगरों का सम्बन्ध ।	1. ये मार्ग देश के विभिन्न नगरों को आपस में जोड़ते हैं । जैसे भारत में बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, नागपुर व हैदराबाद ।

प्रश्न (4) महासागरीय जलमार्ग और तटीय जलमार्ग ।

उत्तर—

महासागरीय जलमार्ग	तटीय जलमार्ग
1. संसार का अधिकांश व्यापार समुद्री मार्गों से होता है ।	1. ये महासागरीय जलमार्ग की तुलना में कम महत्त्वपूर्ण हैं । इनका स्थानीय महत्त्व है ।
2. इन मार्गों के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण मानचित्र में दिया होता है ।	2. इन मार्गों के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण मानचित्र में नहीं दिया होता ।
3. ये मार्ग मौसम तथा प्लावी हिमखण्डों जैसे प्राकृतिक व्यवधानों से तुलनात्मक रूप से मुक्त होते हैं ।	3. ये छोटे-छोटे बन्दरगाहों तथा एश्चुअरी की सहायता करते हैं ।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(1) ट्रान्स-साइबेरियन रेलमार्ग । (2) पनामा नहर । (3) स्वेज नहर । (4) वायु परिवहन । (5) भारतीय वायु सेवा ।

उत्तर—(1) ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग—रेलों का घना जाल विकसित औद्योगिक क्षेत्रों में पाया जाता है । फलतः पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में रेलों का घना जाल है । जापान, भारत यूरोपीय रूस आदि के तटीय क्षेत्रों में रेलों का अच्छा फैलाव है ।

ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग संसार का सबसे लम्बा रेलमार्ग है । यह सोवियत संघ के बाल्टिक सागर के लेनिनग्राद से प्रशान्त महासागर पर स्थित व्लाडीवोस्टक बन्दरगाह को मिलाता है । यह इतना लम्बा रेलमार्ग है कि इसकी पूरी यात्रा में कई दिन लग जाते हैं ।

(2) पनामा नहर—यह समुद्र मार्ग उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका के

पश्चिमी तथा पूर्वी तटीय क्षेत्रों को आपस में मिलता है। इस नहर के निर्माण से पहले दक्षिण अमेरिका का चक्कर लगाकर जाना पड़ता था। इसके बनने से समय, दूरी तथा धन की भारी बचत हुई। संसार का 10% व्यापार इसी नहर द्वारा होता है। उत्तर अमेरिका का सानफ्रांसिस्को तथा दक्षिण अमेरिका का बालपरासो पश्चिमी तटीय क्षेत्र इसके मुख्य बन्दरगाह हैं।

पनामा नहर अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर को मिलाती है। इस नहर का निर्माण मध्य अमेरिका की पहाड़ियों को काटकर किया गया है। यह 82 किलोमीटर लम्बी तथा 100 से 330 मीटर चौड़ी नहर है। समुद्रतल से इसकी अधिकतम ऊँचाई 26 मीटर है। तीन द्वारों की मदद से इस नहर के पानी की सतह को ऊपर उठाया या गिराया जाता है। इससे जहाजों को पार करने में सुविधा होती है।

(3) **स्वेज नहर**—यह मार्ग पश्चिमी तथा दक्षिण यूरोप के बन्दरगाहों को उत्तर अफ्रीका, दक्षिण एशिया तथा आस्ट्रेलिया के बन्दरगाहों से जोड़ता है। पश्चिमी यूरोप के बन्दरगाहों से यात्रा प्रारम्भ करें तो मार्ग में भूमध्य सागर स्वेज नहर के माध्यम से लाल सागर, अदन सागर, बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर होते हुए जाना पड़ता है। इस मार्ग में अन्य सहमार्ग आ मिले हैं जो भूमध्यसागर, फारस की खाड़ी, पूर्वी अफ्रीका, पाकिस्तान, भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के बन्दरगाहों को जोड़ते हैं। इस मार्ग के अन्य मुख्य बन्दरगाह पोर्ट स्वेज, बम्बई, कोलम्बो, सिंगापुर, हांगकांग टोकियो, पर्थ तथा सिडनी विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस मार्ग से संसार का लगभग 15% यातायात होता था। अरब इजराइल संघर्ष के पश्चात् इसे अब पुनः खोला गया है परन्तु यातायात की दृष्टि से उसे पूर्व स्थिति प्राप्त नहीं हुई है।

यह नहर भूमध्यसागर को लाल सागर से मिलाती है। इस नहर की कुल लम्बाई 167 किलोमीटर है। चौड़ाई 65 से 70 मीटर तथा गहराई लगभग 11 मीटर है। यह नहर कई झीलों को मिलाकर बनाई गई है। 20000 टन से कम भार क्षमता वाले 50 जहाज प्रतिदिन इस नहर से गुजरते हैं। इस नहर के द्वारा बम्बई, लन्दन के बीच की दूरी लगभग 6500 किलोमीटर कम हो गई है।

(4) **वायु परिवहन**—द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वायु परिवहन में भारी प्रगति हुई है। इसने पृथ्वी को और भी छोटा बना दिया है। वायुयान द्वारा महीनों की दूरी कुछ ही घण्टों में तय की जा सकती है। हवाई जहाजों को यदि उतरने की सुविधाएँ प्राप्त हों तो ये गुप्त से गुप्त व दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में पहुँच सकते हैं।

हवाई अड्डों की स्थिति एवं आकार बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। इन स्थानों की स्थिति भूमि के स्वभाव पर निर्भर करती है। यह स्थान समतल होना चाहिए तथा साथ ही उच्च पहाड़ियों से घिरी भी न हो। अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा अपने जहाजों को खड़ा करने के लिए उपयुक्त स्थान, रनवे, नियंत्रक मीनार, यात्रियों के लिए हाल तथा विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से युक्त होटल, सड़क एवं रेलवे से जुड़े होने के कारण नगर में स्वयं भी नगर बन जाता है।

वायुमार्ग सामान्यतः स्थल और जलमार्ग का अनुसरण करते हैं। ये मार्ग में पड़ने वाले नगरों को मिलाते हैं। वायुमार्गों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है (1) अत्याधिक दूरी वाले पारमहाद्वीपीय मार्ग (2) सामान्य दूरी वाले अन्तर्देशीय मार्ग (3) कम दूरी वाले क्षेत्रीय मार्ग।

उत्तर प्रशांत महासागर क्षेत्रों को भी कुछ वायुमार्ग सुलभ हैं जो सिंगापुर, हाँगकांग, मनीला तथा हवाई द्वीप द्वारा टोकियो नगरो को उत्तर अमेरिका के पश्चिमी तटीय नगरों से जोड़ता है।

इस प्रकार वायु सेवा ने भिन्न समुदायों को आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे के नजदीक ला दिया है।

(5) **भारतीय वायुसेवा**—गत 15 वर्षों में भारत ने वायुसेवा के राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत की वायु सेवा को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **अंतर्राष्ट्रीय वायुमार्ग**—बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता तथा कुछ हद तक मद्रास ऐसे भारतीय वायुसेवा के केन्द्र हैं जिनका सम्बन्ध विश्व के बड़े नगरों से है। ये पश्चिमी गोलार्ध के लन्दन, बोन तथा न्यूयार्क नगरों तथा पूर्वी गोलार्ध के बैंकाक, सिंगापुर, हाँगकांग, टोकियो, पर्थ तथा सिडनी नगरों से मिले हुए हैं।

2. **राष्ट्रीय वायुमार्ग**—यह देश के विभिन्न नगरों को आपस में जोड़ता है। इनमें बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, नागपुर, हैदराबाद तथा बंगलौर मुख्य हैं। यह भारी संख्या में यात्री तथा माल ढोने के लिए प्रसिद्ध हैं।

3. **क्षेत्रीय वायुमार्ग**—इन मार्गों का सम्बन्ध किसी न किसी मुख्य हवाई अड्डे से है। यह सेवा उन क्षेत्रों के लिए है जहाँ पहुँचना कठिन होता है। कलकत्ता, उत्तर-पूर्वी भारत की दुर्गम पहाड़ियों से युक्त क्षेत्र की सेवा करता है। गोहाटी इसका मुख्य अड्डा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सैलानी भी इस वायुमार्ग का बहुत उपयोग करते हैं। प्राचीन दर्शनीय स्थान जैसे—औरंगाबाद के निकट, भुवनेश्वर तथा खजूराहों में भी हवाई अड्डे हैं।

प्रश्न (4) "यातायात के विकसित साधन किसी देश के उच्च आर्थिक विकास के सूचक है" विवेचना करिये।

उत्तर—यातायात आर्थिक विकास का सूचक—आधुनिक युग में यातायात का बड़ा महत्त्व है। प्राचीन काल में जब यातायात के उत्तम साधनों का अभाव था उस समय आवागमन में बड़ी कठिनाई थी। व्यापार नाममात्र को ही था। पैदल यात्रा करनी पड़ती थी या खच्चरों का सहारा लेना पड़ता था। ऐसे समय में मानव बड़ी परेशानी की अवस्था में था।

धीरे-धीरे मानव ने विज्ञान का सहारा लिया उसका ध्यान नव-निर्माण में लगा। नये-नये आवागमन के अविष्कार हुए जैसे मोटर, रेलगाड़ी, जहाज, हवाई जहाज आदि। इन अविष्कारों के होने से महीनों की यात्रा दिनों में, दिनों की घण्टों में होनी शुरू हो गई।

व्यापार, कृषि और औद्योगिक उन्नति में यातायात के साधनों का बहुत बड़ा हाथ है। उनके अभाव में प्रायः आर्थिक संकट और अकाल पड़ते रहते हैं। यातायात के साधन बड़े-बड़े दूरस्थित स्थानों को जोड़ते हैं। जिससे वस्तुओं का बाजार बढ़ता है। इससे उत्पादन में वृद्धि होती है। जिन देशों अथवा क्षेत्रों में वस्तुओं का अभाव है वे इन वस्तुओं का आयात कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति तथा बचत सुविधापूर्वक कर लेते हैं। इस प्रकार अर्जेन्टाइना अपने अतिरिक्त गेहूँ तथा मांस को यूरोप के देशों को बेचकर, वहाँ से अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए माल प्राप्त करता है। दूसरी ओर ग्रेट ब्रिटेन संसार के विभिन्न देशों को अपना तैयार माल बेचता है तथा खाद्य सामग्री का आयात करता है।

यातायात के साधन कच्चे माल को निर्माण-स्थल पर एकत्र करने में सहायता देते हैं। इनके द्वारा परिष्कृत एवं निर्मित उत्पादों को देश के विभिन्न भागों अथवा माँग के क्षेत्रों में वितरित किया जाता है। अविकासित क्षेत्रों एवं उन भागों में भी जहाँ कच्चे माल का उत्पादन नहीं होता, यातायात तथा संचार साधनों की सहायता से विभिन्न उद्योग स्थापित किये जाते हैं। यातायात के साधनों में अधिकाधिक सामान ढोने की क्षमता, तीव्रगति, सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करने या उन्हें आधुनिकतम बनाने के लिए उद्योगों का विकास हो रहा है।

प्रश्न 5. "रेलमार्गों के विकास से औद्योगीकरण को भारी प्रोत्साहन मिला है।" उदाहरण देते हुए स्पष्ट करो।

उत्तर—रेल मार्ग औद्योगीकरण में सहायक—रेलें यातायात का महत्त्वपूर्ण साधन है। यह उद्योग-धन्धों के विकास की आधार शिला है। रेलों के माध्यम से ही विकसित और विकासशील देशों में उद्योग धन्धों का विकास

हुआ है। रेलें कच्चा माल ढोने और तैयार माल को बाजारों में पहुँचाने के काम आती है। अतः बड़े-बड़े औद्योगिक नगर रेलों द्वारा जुड़े हुए हैं। कनाड़ा तथा सोवियत संघ में रेलमार्गों के कारण ही नई भूमियों को विकसित किया जा सका है। आधुनिक तकनीकी के विकास के बावजूद भी रेलमार्गों पर उच्चावचन के प्रभाव की झलक पड़ती है ये मार्ग सड़कों के जाल, आर्थिक विकास का स्तर तथा जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करते हैं।

रेलों का घना जाल विकसित औद्योगिक क्षेत्रों में पाया जाता है। फलतः पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में रेलों का सबसे घना जाल है। जापान, भारत, यूरोपीय रूस, दक्षिण-पूर्व आस्ट्रेलिया तथा अर्जेन्टाइना के तटीय क्षेत्रों में रेलों का अच्छा फैलाव है। इन क्षेत्रों में भी औद्योगिक तथा व्यापारिक क्रियाओं के फलस्वरूप ही रेल मार्गों का विकास हुआ है।

प्रश्न 6. "वायु सेवा के सदुपयोग से संसार को एक समुदाय का रूप दिया जा सकता है।" स्पष्ट करो।

उत्तर—वायु सेवा का संसार के लिए सदुपयोग—द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वायु परिवहन में भारी प्रगति हुई है। इसने पृथ्वी को ओर भी छोटा बना दिया है। वायुयान द्वारा महीनों की दूरी कुछ ही घण्टों में पूरी करली जाती है। हवाई जहाजों को यदि उतरने की सुविधाएँ प्राप्त हों तो संसार के गुप्त से गुप्त एवं दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में पहुँचा जा सकता है।

वायुमार्ग सामान्यतः स्थल और जल मार्ग का अनुसरण करते हैं। ये मार्ग में पड़ने वाले नगरों को मिलाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के आधे पूर्वी भागों में वायुमार्ग का घना जाल है जो बड़े औद्योगिक तथा व्यापारिक नगरों को जोड़ता है। पश्चिमी यूरोप में वायुमार्ग का दूसरा घना जाल है। सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप के देशों में अच्छे क्षेत्रीय वायु मार्ग हैं। आस्ट्रेलिया तथा कनाडा में वायु मार्गों के विस्तार पर अधिक बल दिया गया है, क्योंकि इन देशों ने बड़े नगरों के साथ कृष्य तथा पशुचारणिक भूमियों को भी वायु सेवा से जोड़ा गया है। अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका के विकासशील क्षेत्रों में भी वायु मार्ग का महत्त्व बढ़ रहा है। यहाँ दूरवर्ती एवं अगम्य स्थानों को वायु सेवा से जोड़ा जा रहा है। मुख्य अंतर्राष्ट्रीय वायुमार्ग उत्तर अटलांटिक महासागर को पार कर उत्तर अमेरिका के पूर्वी तटीय नगरों को पश्चिमी यूरोप के नगरों से मिलता है। दूसरा महत्त्वपूर्ण वायुमार्ग पश्चिमी यूरोप और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों तथा भारत को मिलता है।

इस प्रकार वायु सेवा ने भिन्न समुदायों को आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से

एक दूसरे के नजदीक ला दिया है। यदि पिछड़े राष्ट्रों को आर्थिक शोषण के भय तथा युद्ध के भय से मुक्त कर दिया गया तो वे संसार को एक समुदाय के रूप में बनाने में समर्थ होंगे।

प्रश्न 7. यातायात और संचार के साधन किस प्रकार कृषि एवं औद्योगिक विकास में मदद करते हैं ?

उत्तर—यायायात और संचार के साधन कृषि एवं औद्योगिक विकास में निम्नलिखित ढंग से मदद करते हैं :

यातायात और संचार के साधन कच्चे माल को कारखानों के पास इकट्ठा करते हैं। इनके कारण कच्चा माल कम समय और कम कीमत पर इकट्ठा किया जा सकता है।

कारखानों द्वारा जो सामान तैयार होता है उसे देश के विभिन्न भागों अथवा मांग के क्षेत्रों में वितरित किया जाता है। यदि यातायात के ये साधन माल ढोने का काम न करते तो मांग वाले क्षेत्रों में वस्तु के अभाव में कीमतें बहुत बढ़ जाती।

अविकसित क्षेत्रों एवं उन भागों में भी जहाँ कच्चे माल का उत्पादन नहीं होता, यातायात तथा संचार साधनों की सहायता से विभिन्न उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

यातायात और संचार साधनों में अधिकाधिक सामान ढोने की क्षमता, तीव्र गति, सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करने या उन्हें आधुनिकतम बनाने के लिए उद्योगों का विकास हो रहा है।

यातायात और संचार के साधन जहाँ औद्योगिक विकास में मदद करते हैं वहाँ ये कृषि विकास की मदद करने में भी सहायक हैं।

देश के विभिन्न देहाती क्षेत्रों के आंतरिक भागों को भी सड़कों द्वारा जोड़ दिया गया है। इससे किसान अपनी उपज को शहरों में ले जाकर ऊँचे दामों पर बेचने लगा है। खाद्यान्न ट्रकों, रेलों, जहाजों द्वारा विदेशों को भेजा जाने लगा है। मांग के अनुसार विभिन्न प्रकार की खेती होनी शुरू हो गई है।

इस प्रकार यातायात और संचार के साधन कृषि एवं औद्योगिक विकास में मदद करते हैं।

स्वयं करें और खोजें

प्रश्न 1. संसार के रेल तथा सड़क मार्गों के मानचित्रों को किसी एटलस में देखिए। उनका अध्ययन करते हुए निम्नलिखित के सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकालिए।

उत्तर—(क) जनसंख्या—संसार के उन भागों में जनसंख्या अधिक है, जहाँ पर यातायात के साधन उत्तम हैं, समतल मैदान हैं, पानी सुगमता से

मिल जाता है। खनिज पदार्थों का बाहुल्य है। मानचित्र को देखने से पता लगता है कि 90 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या उत्तरी गोलार्ध में पाई जाती है। विश्व का लगभग 80 % भू भाग लोगों के रहने योग्य नहीं है। या तो ये भू भाग अति पहाड़ी अथवा अति शुष्क हैं या अति आर्द्र या अति गर्म या अति ठण्डे हैं। इन क्षेत्रों में कनाडा, यूरोप के टुंड्रा प्रदेश, आर्कटिक के ठण्डे ध्रुवीय प्रदेश आदि आते हैं।

(ख) उद्योग-धन्धे—उद्योग धन्धों का जहाँ तक प्रश्न है, मानचित्रावली में देखने पर पता चलता है कि ये उद्योग धन्धे उन्हीं स्थानों पर पनपे हैं जहाँ खनिज पदार्थ अधिक हैं व लोहा और कोयला भी मिलता है। जल शक्ति प्रचुर मात्रा में है। उद्योग-धन्धों के पनपने में जलवायु का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उद्योग धन्धों की दृष्टि से संयुक्य राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, सोवियत रूस व पश्चिमी जर्मनी ने बड़ी उन्नति की है।

(ग) कृषि—कृषि उन्हीं देशों में अधिक की जाती है जहाँ की भूमि उपजाऊ, सिंचाई की सुविधा हो व उत्तम बीजों का प्रबन्ध हो। संसार में संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, चीन व भारत मुख्य रूप से कृषि में आगे बढ़े हुए हैं।

(घ) आर्थिक स्तर—संसार में उन्हीं देशों का आर्थिक स्तर ऊँचा उठा है जहाँ पर उद्योग धन्धे चल रहे हैं। यातायात के साधन प्रचुर मात्रा में है। संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, ग्रेट ब्रिटेन आदि ऊँची आर्थिक स्तर वाली श्रेणी में आते हैं। दूसरी ओर ईरान, घाना, मलेशिया उन देशों में आते हैं जिनका आर्थिक स्तर निम्न श्रेणी का है।

प्रश्न 2. भारत के रेखा मानचित्र में प्रधान रेलमार्ग दिखाते हुए स्पष्ट करिये कि किन भागों में रेलमार्गों का घना जाल है और किन भागों में अभाव है? ऐसा क्यों?

उत्तर—भारत के रेखा मानचित्र में प्रधान रेल मार्ग एटलस की सहायता से दिखाइये।

भारत के कुछ भागों में रेलों का जाल बिछा पड़ा है। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली आदि इसी श्रेणी में आते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसा भी भाग हैं जहाँ रेलों का विकास नहीं हुआ है। जैसे—राजस्थान, मणिपुर, सिक्किम आदि।

अध्याय 7

व्यापार

भूमिका—मनुष्य अपनी हर आवश्यकता स्वयं पूरी नहीं कर सकता। उसके पास जो वस्तुएँ अधिक मात्रा में होती हैं उसके विनिमय द्वारा वह अपनी आवश्यकता की वस्तुएं दूसरों से प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया आदि काल से लेकर अब तक चली आ रही है। जैसे-जैसे समाज ने प्रगति की उनके उत्पाद अधिक से अधिक विशिष्ट होते चले गये और विनिमय की प्रक्रिया अधिक क्षेत्र में फैल गई। जब पुराने महाद्वीपों के लिए नए मार्गों की खोज हुई तथा नए महाद्वीपों का पता चला तब वस्तु विनिमय का महत्त्व और भी बढ़ गया। यातायात के क्रान्तिकारी साधनों जैसे वाष्प तथा विद्युत आदि के प्रादुर्भाव से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के आर्थिक उत्पादों के विनिमय में भारी सुविधा मिली। इस विनियम को साधारण शब्दों में व्यापार कहते हैं।

व्यापार का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय रूपों में हो सकता है। स्थानीय, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर का विनिमय आन्तरिक व्यापार कहलाता है। दो देशों के मध्य वस्तु-विनिमय को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। एक राष्ट्र अनेक राष्ट्रों के साथ आर्थिक विनिमय करता है और ये सभी सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की श्रेणी में आते हैं।

समस्त व्यापार का आधार भौगोलिक है। कुछ क्षेत्र कृषि प्रधान हैं तो उनके पड़ौसी क्षेत्र पशुचारणिक हो सकते हैं। किसी क्षेत्र में उपयोगी निर्मित वस्तुएँ हो सकती हैं तो दूसरे क्षेत्र में वनों से प्राप्त होने वाले प्राथमिक उत्पाद, विश्व की वर्तमान अर्थव्यवस्था में राष्ट्र बड़े पैमाने पर आर्थिक वस्तुओं का विनिमय करते हैं। वे अपने साधनों का प्रयोग करके अधिकाधिक लाभ उठाते हैं और अपनी अतिरिक्त वस्तुओं को बेच, आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार आन्तरिक व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभिन्न क्षेत्रों में भौगोलिक साधनों की भिन्नता पर निर्भर करता है। आन्तरिक व्यापार देश की सीमा के अंतर्गत ही होता है। किसी देश के अन्य स्वतन्त्र देश के साथ किये गये व्यापार को विदेशी व्यापार कहते हैं। सामान्यतः एक देश जिसके पास अतिरिक्त उत्पादन होता है वह उसे दूसरे देशों को भेजता है। यह उस देश का निर्यात कहलाता है। अपनी आवश्यकता के लिए जो देश जिन वस्तुओं को दूसरे देशों से मंगवाता है वह उसका आयात कहलाता है। जब कोई देश आयात की अपेक्षा निर्यात अधिक करता है तो यह व्यापार का अनुकूल संतुलन

कहलाता है। प्राय: विदेशी व्यापार की स्थिति मुद्रा के मूल्यांकन पर निर्भर करती हैं। इससे भुगतान का सन्तुलन बनता है।

यदि दो देशों के बीच व्यापार बिना किसी प्रतिबन्ध के चलता है तो इसे मुक्त व्यापार कहते हैं। परन्तु राजनीतिक कारणों से ऐसा नहीं हो पाता। प्रत्येक राष्ट्र आत्म-निर्भर बनकर दूसरे देशों से मुक्त रहना चाहता है। सरकारी नीतियाँ राजनीतिक उद्देश्य तथा बेरोजगार जैसी स्थानीय समस्याओं से प्रभावित होती है। सन् 1976 के कुल विश्व व्यापार में समाजवादी देशों को छोड़कर विकसित देशों का 74% योग था, जबकि एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण व मध्य अमेरिका के विकासशील देशों का केवल 26% अंश ही रहा। इससे स्पष्ट होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विकसित देशों का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान रहा।

इस अध्याय में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय व्यापार व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अर्थ को स्पष्ट किया गया है वहाँ दूसरी ओर भारत के आन्तरिक व विदेशी व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। पत्तन व पोत्ताश्रत के महत्त्व पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

प्रश्न (1) विनियम से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—विनिमय का अर्थ—साधारणतया वस्तुओं की अदला-बदली विनिमय कहलाती है। मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्त्ति स्वयं नहीं कर सकता। जो वस्तु उसके पास अधिक मात्रा में है उनके विनिमय द्वारा ही वह अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ दूसरों से प्राप्त करता है। इस विनिमय में दोनों पक्ष परस्पर एक दूसरे से वस्तु बदल कर अपनी-अपनी आवश्यक्ता की पूर्त्ति करते हैं। यह प्रक्रिया प्राचीन काल से चली आ रही है। विनिमय दो प्रकार का होता है। 1. वस्तु विनिमय 2. मुद्रा अर्थव्यवस्था। वस्तु के बदले में वस्तु प्राप्त करना 'वस्तु विनिमय' कहलाता है। जब वस्तुओं का विनिमय मुद्रा से होता है तब वह 'मुद्रा अर्थव्यवस्था' कहलाता है।

प्रश्न (2) ऐस्किमो लोगों की आय का मुख्य स्रोत क्या है ?

उत्तर—ऐस्किमो लोगों की आय का मुख्य स्रोत—ऐस्किमो लोगों की आय का मुख्य स्रोत फर है। वे फर बेचकर अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ जैसे—खाद्यान्न व विशेषकर रायफल तथा हथियार प्राप्त करते हैं। इन हथियारों की मदद से वे अधिकाधिक फर वाले पशुओं का शिकार करते हैं तथा उनकी खाल को बेचकर अपनी आय बढ़ाते हैं।

प्रश्न (3) आयात का क्या अर्थ है ?

उत्तर—आयात का अर्थ—अपनी आवश्यकता के लिए जो देश जिन वस्तुओं को दूसरे देशों से मंगवाता है, वह उस देश का आयात कहलाता है।

प्रश्न (4) व्यापार सन्तुलन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—व्यापार सन्तुलन का अर्थ—जब कोई देश आयात की अपेक्षा निर्यात अधिक करता है तो यह व्यापार का अनुकूल सन्तुलन कहलाता है। प्राय: विदेशी व्यापार की स्थिति मुद्रा के मूल्यांकन पर निर्भर करती है और इससे भुगतान का सन्तुलन बनता है।

प्रश्न (5) भारत यूरोप के पश्चिमी देशों के स्थान पर पूर्वी देशों से व्यापार बढ़ाने में अधिक उत्सुक क्यों है ?

उत्तर—भारत द्वारा पूर्वी देशों से व्यापार बढ़ाने की उत्सुकता का कारण—भारत पूर्वी यूरोप के देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ा रहा है क्योंकि ये देश रुपये के रूप में भुगतान लेते है जबकि पश्चिमी देश अपनी मुद्रा में ही उसका भुगतान चाहते है।

प्रश्न (6) भारत में आन्तरिक व्यापार का विशेष महत्त्व क्यों है ?

उत्तर—भारत में आन्तरिक व्यापार का विशेष महत्त्व—भारत में आन्तरिक व्यापार का विशेष महत्त्व है। भारत का यह व्यापार विदेशी व्यापार से कम से कम दस गुना अधिक है। इससे देश के विस्तृत क्षेत्र, विभिन्न जलवायु, प्राकतिक साधनों तथा विभिन्न क्षेत्रों में अधिक विकास की भिन्न अवस्था स्पष्ट होती है।

प्रश्न (7) भारत का आन्तरिक व्यापार किन तीन रूपों में होता है ?

उत्तर—भारत का आन्तरिक व्यापार सामान्यत: निम्नलिखित तीन रूपों में होता है :

1. अतिरिक्त उत्पादन क्षेत्रों से कमी वाले क्षेत्रों के लिए खाद्यान्न का परिवहन।

2. कच्चे माल का परिबहन जो औद्योगिक क्षेत्रों तथा निर्यात के लिए पत्तनों का होता है।

3. विशेष उत्पादों जैसे चाय, कहवा, चीनी, पैट्रोल व मिट्टी के तेल तथा निर्मित वस्तुओं का उत्पादन या पूर्त्ति के क्षेत्र से उन प्रदेशों को जहाँ उनकी मांग है तथा निर्यात के लिए पत्तनों को परिवहन।

प्रश्न (8) पत्तन पृष्ठभूमि से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—पत्तन पृष्ठ भूमि का अर्थ—पत्तन वह क्षेत्र है, जहाँ निर्यात के लिए वस्तुएँ एकत्रित की जाती हैं। वह क्षेत्र जिस पर पत्तन सम्बन्धी आर्थिक क्रियाएँ होती हैं उसे पृष्ठभूमि अथवा पत्तन को प्रभावित करने वाला क्षेत्र कहते हैं। सामान्यत: जितना बड़ा पत्तन होता है प्राय: उतनी ही बड़ी पृष्ठभूमि

होती है।

प्रश्न (9) बम्बई भारत का सबसे उत्तम बन्दरगाह किस प्रकार बना ?

उत्तर—बम्बई भारत का सर्वोत्तम बन्दरगाह—यह बन्दरगाह कच्चे तेल के परिष्करण के लिए आयात करता है। इसका बहुत उत्तम ढंग से विकास किया गया है। यह एक प्राकृतिक बन्दरगाह है। यह 10 मीटर से अधिक गहरा है। यहाँ भारी जहाज लंगर डाल सकते हैं। 92 वर्ग किलोमीटर में यह बन्दरगाह फैला है। यहाँ सांताक्रूज हवाई अड्डा है। यातायात के समुचित साधन हैं। पृष्ठभूमि उपजाऊ तथा विकसित है। स्वेज नहर के बनने से इसका महत्त्व बढ़ गया है।

प्रश्न (10) बन्दरगाहों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वार क्यों कहते हैं ?

उत्तर—बन्दरगाह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वार—विश्व का व्यापार इन पत्तनों के माध्यम से ही होता है। 250 से अधिक सामुद्रिक बन्दरगाह विश्व के विभिन्न तटीय भागों पर फैले हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार कार्य में व्यस्त हैं। इसी कारण इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वारा कहा जाता है।

प्रश्न (11) "स्वतन्त्रता से पूर्व भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार देश हित में नहीं था" क्यों ?

उत्तर—देश-हित में न होने का कारण—स्वतन्त्रता से पूर्व भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार देशहित में नहीं था इसका कारण यह था कि उस समय भारत मुख्यतः कपास, तिलहन, जूट, खाल व चमड़ा तथा कुछ खनिजों का निर्यात करता था। यह निर्यात केवल शासक देश की औद्योगिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए किया जाता था। इसके बदले में लंकाशायर से वस्त्रों का आयात करना पड़ता था। इससे हमारे देश को कोई लाभ नहीं था क्योंकि देश की आय नहीं हो पाती थी।

प्रश्न (12) स्वतन्त्रता के बाद भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की क्या प्रमुख विशेषता रही ?

उत्तर—भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विशेषता—स्वतन्त्रता के पश्चात भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का रूप बदल गया है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति हुई है और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्रों में विभिन्न देशों के साथ सम्पर्क बढ़ा। अब अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हमारे लिए अधिक सार्थक एवं लाभप्रद बन गया है।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करो :

प्रश्न (1) व्यापार और मुद्रा अर्थव्यवस्था।

उत्तर—

व्यापार	मुद्रा अर्थव्यवस्था
1. व्यापार का क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है। यह स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय रूपों में हो सकता है। स्थानीय, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर का विनिमय आन्तरिक व्यापार कहलाता है। दो देशों के मध्य वस्तु-विनिमय को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।	1. मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति मुद्रा अर्थव्यवस्था द्वारा करता है। जब वस्तुओं का विनिमय मुद्रा द्वारा होता है तब वह मुद्रा अर्थव्यवस्था कहलाता है। इसके द्वारा व्यापार में आसानी हो गई है। मुद्रा द्वारा आन्तरिक व्यापार होता है। अब कुछ यूरोप के पूर्वी देश भारतीय मुद्रा को स्वीकार करने लगे है।

प्रश्न (2) आन्तरिक व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार।

उत्तर—

आन्तरिक व्यापार	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
1. यह व्यापार देश की सीमा के अन्दर ही होता है।	1. यह देश की सीमा के बाहर से होता है। यह एक देश का दूसरे देश से किया गया व्यापार है।
2. यह व्यापार भौगोलिक साधनों की भिन्नता पर निर्भर करता है।	2. यह व्यापार भी भौगोलिक साधनों की भिन्नता पर निर्भर करता है।
3. इसके वातावरण और प्राकृतिक साधनों में विशेष अन्तर नहीं होता।	3. इसके वातावरण और प्राकृतिक साधनों में विशेष अन्तर होता है।

प्रश्न (3) व्यापार का अनुकूल सन्तुलन और भुगतान का सन्तुलन।

उत्तर—

व्यापार का अनुकूल सन्तुलन	भुगतान का सन्तुलन
1. जब कोई देश आयात की अपेक्षा निर्यात अधिक करता है तो यह व्यापार का अनुकूल सन्तुलन कहलाता है।	1. प्रायः विदेशी व्यापार की स्थिति मुद्रा के मूल्यांकन पर निर्भर करती है और इससे भुगतान का सन्तुलन बनता है।

प्रश्न (4) आयात और निर्यात।

उत्तर—

आयात	निर्यात
1. अपनी आवश्यकता के लिए जो देश जिन वस्तुओं को दूसरों से मंगवाता है वह उसका आयात कहलाता है।	1. सामान्यतः एक देश जिसके पास अतिरिक्त उत्पादन होता है वह उसे दूसरे देशों को भेजता है। यह उस देश का निर्यात कहलाता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथन को सर्वोचित विकल्प से पूरा करिये :

समुद्री यात्रा निरन्तर कम होती जा रही है क्योंकि—

(1) ज्वार-भाटा तथा तूफानों से जीवन को खतरा बना रहता है।

(2) समुद्र से यात्रा करने में अधिक समय लगता है।

(3) हवाई सुविधाएँ निरन्तर बढ़ रही हैं।

(4) जलपोत-निर्माण के लिए सब जगह उपयुक्त लकड़ी उपलब्ध नहीं है।

उत्तर—समुद्री यात्रा निरन्तर कम होती जा रही है क्योंकि हवाई सुविधाएँ निरन्तर बढ़ रही हैं।

प्रश्न 4. तालिका में दिये गये देशों की निम्नलिखित वस्तुओं के सम्बन्ध में व्यापारिक स्थिति स्पष्ट करिये :

(1) चावल (2) गेहूँ (3) तिलहन (4) कपास (5) कच्चा जूट (6) चाय (7) रबर।

देश जिनमें कमी जिनमें पर्याप्त जिनमें अधिकतम

बर्मा, भारत, बंग्ला देश, मलयशिया, सं० रा० अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत संघ, चीन, श्री लंका, जापान।

उत्तर—

देश	जिनमें कमी	जिनमें पर्याप्त	जिनमें अधिकतम
बर्मा	—	रबर, गेहूँ, कपास कच्चा जूट	चावल, तिलहन, चाय
भारत	गेहूँ, रबर, चावल	—	कपास, चाय, तिलहन, कच्चा जूट
बांग्ला देश	चावल	कपास, गेहूँ, तिलहन, चाय, रबर	कच्चा जूट

मलयशिया	चावल	कच्चा जूट, गेहूँ कपास, चाय	रबर
संयुक्त राज्य अमेरिका	कच्चा जूट, चाय रबर	— —	चावल गेहूँ, तिलहन कपास
ब्रिटेन	तिलहन, चाय रबर	कच्चा जूट, चावल, गेहूँ	कपास
सोवियत संघ	चाय, रबर	कच्चा जूट, कपास चावल, तिलहन, गेहूँ	—
चीन	चावल, गेहूँ, रबर	कच्चा जूट, तिलहन कपास, चाय	—
श्री लंका	चावल	कच्चा जूट, तिलहन कपास, गेहूँ	चाय, रबर
जापान	चावल, चाय रबर	गेहूँ, तिलहन कच्चा जूट	कपास

प्रश्न 5. व्यापार को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं पर विचार स्पष्ट करिये।

उत्तर—व्यापार को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलू—समस्त व्यापार के आधार मुख्यतः भौगोलिक हैं। कुछ क्षेत्र कृषि प्रधान हैं तो उनके पड़ौसी क्षेत्र पशुचारणिक हो सकते हैं। इस प्रकार महाराष्ट्र की घाटी में रहने वाले किसान अपने कृषि उत्पादों का विनियम महाराष्ट्र के पठार पर रहने वाले भेड़-पालकों से करते हैं। किसी क्षेत्र में उपयोगी निर्मित वस्तुएँ हो सकती हैं तो दूसरे क्षेत्रों में वनों से प्राप्त होने वाले उत्पाद।

व्यापार को प्रभावित करने वाला अन्य पहलू मानव प्रयास और तकनीकी है। आस्ट्रेलिया की आज से 200 वर्ष पूर्व न तो खोज हुई और न वहाँ उपनिवेशन हुआ। वहाँ प्राकृतिक साधन तो पहले से ही थे परन्तु एंग्लो-सैक्शन समुदाय के प्रवासियों ने उसे तकनीकी प्रयोग से गेहूँ, मांस तथा ऊन का प्रमुख निर्यातक क्षेत्र बना दिया। दक्षिण पश्चिम एशिया के देशों में खनिज तेल साधनों का हाल ही में विकास हुआ है। तकनीकी प्रयोग के कारण इन लोगों ने शीघ्र ही ख्याति प्राप्त करली है। कुशल मानव श्रम अपने प्राकृतिक साधनों का सही उपयोग कर, निर्यात के लिए अधिक उत्पादन भी करता है।

व्यापार को प्रभावित करने वाले अन्य पहलू सड़कें, बाजार, पूंजी आदि हैं।

प्रश्न 6. "व्यापार सभ्यता का सूचक है।" कथन की पुष्टि करिये।

उत्तर—व्यापार सभ्यता का सूचक—"व्यापार सभ्यता का सूचक है।"

यह कथन बिल्कुल ठीक है। जब एक देश दूसरे देश के साथ व्यापार करता है तो उन दोनों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। जब अंग्रेज भारत में व्यापार करने आए तो उनकी संस्कृति का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ा और हमारी संस्कृति का प्रभाव उन पर पड़ा। उनके सम्पर्क में आने के बाद हम लोगों का रहन-सहन, खान-पान और वेशभूषा बदलनी शुरू हो गई। एक तरह से हम पाश्चात्य रंग में रंगते चले गये।

व्यापार एक ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है जब दो देशों के व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो उनके ज्ञान में भी वृद्धि होती है। रूढ़िवाद भी समाप्त होने लगता है।

राजनीतिक विचारों का आदान-प्रदान होता है। राजनीतिक सम्बन्ध बनते हैं।

बिदेशी व्यापार के कारण जो सम्पर्क स्थापित होता है उससे सभ्यता को बढावा मिलता है। प्राचीन काल में सती प्रथा का भयंकर रूप देखने को मिलता था। अंग्रेजों के आने पर यह बन्द हुआ। बालहत्या भी प्रचलित थी बाद में चलकर इसे भी बन्द कर दिया गया।

अफ्रीका के बहुत से देश सभ्यता की ओर व्यापार के कारण ही बढ़े। विदेशी जब इन देशों में पहुँचे तो उन्होंने वहाँ के लोगों को सभ्य बनाया।

प्रश्न 7. मुक्त व्यापार के गुण-दोषों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—मुक्त व्यापार के गुण-दोष—मुक्त व्यापार के गुण दोषों पर विचार करने से पहले मुक्त व्यापार का अर्थ समझना जरूरी है। जब दो देशों के मध्य व्यापार बिना किसी प्रतिबंध के चलता है तो उसे मुक्त व्यापार कहते हैं।

यदि दो देशों के मध्य व्यापार बिना किसी प्रतिबन्ध के चले तो यह आपसी विनिमय दोनों के लिए ही अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। क्योंकि प्रत्येक देश अधिक लाभदायक तरीके से अधिकाधिक उत्पादन कर उसका निर्यात कर सकेगा।

परन्तु राजनीतिक कारणों से ऐसा नहीं होता। प्रत्येक राष्ट्र आत्मनिर्भर बनकर दूसरे देशों से मुक्त रहना चाहता है सरकारी नीतियाँ, राजनीतिक उद्देश्य तथा बेरोजगार जैसी स्थानीय समस्याओं से प्रभावित होती है। सीमा-कर, कोटा प्रणाली, विनिमय पर नियंत्रण आदि द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बाधाएँ उत्पन्न की गई हैं।

मुक्त व्यापार को बढावा देने के लिए विकास शील देश प्रयत्न कर रहें हैं। कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार का संगठन यूरोपियन आर्थिक समुदाय है जिसका लक्ष्य सदस्य देशों के बीच आर्थिक

क्रिया कलापों का अधिकाधिक विस्तार करना है। यूरोपियन मुक्त व्यापार साहचर्य, लेटिन अमेरिका मुक्त व्यापार परिषद् आदि इसी प्रकार की अन्य संस्थायें हैं। इस सम्बन्ध में सभी एक मत है कि राष्टों के बीच व्यापार अधिक सुगमतापूर्वक हों।

प्रश्न 8. विकसित देशों की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में हर प्रकार से जीत रहती है, क्यों ?

उत्तर—विकसीत देशों की अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में जीत—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में ग्राहक और विक्रेता की सौदेबाजी की क्षमता विशेष महत्त्व रखती है। विकसित देशों की अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में जीत के निम्नलिखित कारण हैं :

1. **मशीन, औजार आदि सामान का बाहुल्य**—पश्चिमी यूरोप तथा उत्तर अमेरिका के विकसित देशों के बने हुए सामान जैसे मशीन, औजार तथा इंजीनियरिंग के सामान की विकासशील देशों में भारी मांग है। इन देशों में कृषि उत्पादकों की अधिकता होती है और ये कृषि उत्पाद अधिकतर खराब होने वाले होते हैं जिससे ये देश सौदेबाजी में कमजोर पड़ जाते हैं।

2. **खनिज अयस्क खरीदना**—विकासशील देश विकसित देशों से खनिज अयस्क भी खरीद लेते हैं। इससे भी विकसित देशों की व्यापार में जीत होती है।

3. **वित्तीय व यातायात की मदद**—बहुदा पिछड़े राष्ट्र वित्तीय तथा यातायात की मदद के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों अथवा औद्योगिक देशों की एजेन्सियों पर निर्भर करते हैं।

4. **कच्चे मालों का निर्धारित मूल्य**—विकसित देश विकासशील देशों के कच्चे माल का मूल्य निर्धारित कर देते हैं। इससे इन राष्ट्रों को और भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। क्योंकि इससे इन कच्चे माल के निर्यातक देशों को अधिकारपूर्ण लाभ भी प्राप्त नहीं होता।

विकसित देशों द्वारा यह शोषण कैसे रोका जाए यह बात पैट्रोल निर्यातक देशों के संगठन कार्यों से भली-भाँति देखी जा सकती है। दक्षिणी, पश्चिमी एशिया के देशों ने आम राय बनाकर पैट्रोल का निर्यात मूल्य बढ़ा दिया और वे लाभान्वित हुए। फिर भी यही कहा जा सकता है कि आज भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अधिकांशतः विकसित देशों को ही अधिक लाभ मिलता है। पिछड़े देश लाभ से वंचित रहते हैं।

प्रश्न 9. पत्तनों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए पत्तनों के विभिन्न रूपों का उल्लेख करो।

उत्तर—पत्तनों का महत्त्व—250 से अधिक सामुहिक बन्दरगाह विश्व के विभिन्न तटीय भागों पर फैले हुए हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार कार्य में व्यस्त हैं। इसके अलावा लगभग 7000 मध्यम तथा छोटे बन्दरगाह

हैं जो तटीय तथा स्थानीय व्यापार की सेवा करते हैं। ये पोत निर्माण सम्बन्धी सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।

पत्तनों के विभिन्न रूप

विश्व के प्रमुख पत्तनों को कई वर्गों में वर्गीकृत किया गया है :

सामान्य कार्गो पत्तन, भारी समान ढोने वाले पत्तन, थोक सामग्री से सम्बन्धित पत्तन तथा तेलवाहक पत्तन।

पहले पत्तनों का प्रयोग यात्रियों के लिए भी काफी किया जाता था। अतः यात्री पत्तन भी अपने प्रकार के ही पत्तन थे जहाँ यात्रियों के चढ़ने व उतरने की पर्याप्त सुविधाएँ सुलभ थीं। विश्व के अधिकाँश पत्तन भारी मात्रा में माल का परिवहन करते हैं। इनकी क्षमता प्रतिवर्ष 250 लाख टन से भी अधिक है।

तेलवाहक पत्तन विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से युक्त होते हैं। इनमें पाइप लाइनों तथा तेल भण्डार की व्यवस्था होती है। इनमें कच्चा तथा परिष्कृत तेल एकत्रित किया जाता है। इस प्रकार के बन्दरगाह भी दो प्रकार के होते हैं एक तो वे जिनसे कच्चे तेल का निर्यात होता है तथा दूसरे वे जिनसे कच्चे तेल का आयात होता है। तेलवाहक पत्तन मुख्य रूप से तेल निकालने वाले क्षेत्रों के पास पाये जाते हैं। इन पत्तनों से केवल तेल ही भेजा जाता है।

आस्ट्रेलिया के बड़े बन्दरगाह मुख्यतः खाद्यान्न तथा पशुचारणिक उत्पादों का निर्यात करते हैं। इनमें सिडनी मेलबोर्न, व एडीलेड आदि मुख्य हैं।

प्रश्न 10. बम्बई और कलकत्ता के बन्दरगाहों के व्यापार और उनकी पृष्ठभूमि की आपस में तुलना करो।

उत्तर—

बम्बई बन्दरगाह	कलकत्ता बन्दरगाह
इसकी गहराई तट पर 10 मीटर से अधिक है। यहाँ भारी जहाज लंगर डाल सकते हैं। यह बन्दरगाह 92 वर्ग किलोमीटर में फैला है। यहाँ 'साँताक्रूज' हवाई अड्डा है। यातायात के समुचित साधन हैं।	यह बन्दरगाह खाड़ी बंगाल से 140 किलोमीटर दूर हुगली नदी के किनारे स्थित है। सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त बन्दरगाह है। बन्दरगाह का पृष्ठ भाग उपजाऊ और घना आबाद है। पृष्ठ भाग में खनिज काफी मात्रा में निकलता है।
पृष्ठ भूमि उपजाऊ तथा उद्योग में विकसित है स्वेज नहर के बन जाने	यहाँ उद्योगों की भरमार है। नगर आबादी की दृष्टि से भारत में प्रथम

से बम्बई बन्दरगाह का व्यापारिक महत्त्व बढ़ गया है। यहाँ से रूई, तम्बाकू, खालें, हल्दी, तेल, सूती कपड़ा, बिजली का सामान तथा मैंगनीज देश से बाहर भेजा जाता है। इसे भारत का सिंह द्वार कहते हैं।

नम्बर पर है। यातायात के साधन पर्याप्त हैं। यहाँ पर 'डम-डम' हवाई अड्डा है। इस बन्दरगाह को पूर्वी भारत का मुख्य द्वार भी कहते हैं। कोयला, जूट का समान, चाय, तिलहन, चमड़ा, हड्डी, अफीम, लाख, चीनी, कच्चा लोहा, कोयला, फौलाद का सामान तथा अभ्रक इस बन्दरगाह से बाहर भेजे जाते हैं।

स्वयं करें और खोजें

प्रश्न 1. भारत के मुख्य आयात एवं निर्यात की वस्तुओं की सूची तैयार करिये और उनका आयातक व निर्यातक देशों से सम्बन्ध जोड़िए।

उत्तर—भारत के मुख्य निर्यात की वस्तुएँ :

वस्तुओं के नाम	देशों के नाम
लोह अयस्क	जापान, ब्रिटेन, इटली, चैकोस्लोवाकिया, रूमानिया
मैंगनीज	यू० एस० ए०, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, जापान, बेल्जियम, कनाडा
अभ्रक	ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, यू० एस० ए०
कोयला	लंका, बंग्ला देश, ब्रह्मा, पाकिस्तान
चाय	यू० एस० ए०, कनाड़ा, ब्रिटेन, आयरलैंड, न्यूजीलैंड
कपास	ब्रिटेन, यू० एस० ए० आदि
कहवा	यूरोप के कुछ देश, आस्ट्रेलिया
जूट का सामान	यूनाइटेड किंगडम
चीनी	संयुक्त राज्य अमेरिका, थाइलैंड, बंग्ला देश, अफगानिस्तान, मिस्र, सूडान
चमड़ा उत्पाद, फल, इंजीनियरिंग का सामान	सोवियत संघ

भारत के प्रमुख आयात की वस्तुएँ

वस्तुओं के नाम	देशों के नाम
चावल	ब्रह्मा, श्रीलंका, थाईलैंड
गेहूं	आस्ट्रेलिया, कनाडा, यू. एस. ए., रूस
जूट	बांग्ला देश
मेवा तथा कालीन	अफगानिस्तान
कपास	मिस्र, सूडान
पैट्रोलियम	अरब देश, बर्मा, इण्डोनेशिया
कागज, कागज उत्पाद, अखबारी कागज	कनाडा
मशीने	यूनाइटेड किंगडम, पश्चिमी जर्मनी, रूस
लम्बे रेशे की कपास	मिस्र, सूडान

प्रश्न 2. भारत के मानचित्र में प्रमुख बन्दरगाह दिखाते हुए उनसे आयात और निर्यात होने वाली वस्तुओं को भिन्न चिन्हों की मदद से स्पष्ट करिये।

उत्तर—इस प्रश्न का उत्तर 'एटलस' की सहायता से तैयार कीजिए।

अध्याय 8

विश्व की जनसंख्या

भूमिका—इस अध्याय के प्रारम्भ में ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में मनुष्य और उसके वातावरण के अन्तरसम्बन्धों पर विचार किया गया है। साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है। कि विश्व के विभिन्न भागों में किस प्रकार जनसंख्या का विकास हुआ है। विश्व की जनसंख्या के भौगोलिक वितरण का अध्ययन करते समय महाद्वीपों तथा विभिन्न, देशों की जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अलावा निम्न सामान्य तथा अधिक जनसंख्या के घनत्व वाले प्रदेशों का भी अध्ययन किया गया है। इसके बाद संसार में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उसके भरण-पोषण के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री प्राप्त करने की समस्या पर विचार किया गया है। साथ ही प्रवसन तथा नगरीकरण की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का भी वर्णन किया गया है।

मानव जगत के सही इतिहास का पता प्राचीन नदी घाटियों की सभ्यता

से हुआ। इनमें सिंधु, नील, दजला-फरात तथा ह्वांग हो घाटी की सभ्यता उल्लेखनीय है। लोग गावों में बसे तथा नगरों का जन्म हुआ। इस प्रकार नदी-घाटियाँ जनसंख्या के जमाव केन्द्र तथा सभ्यता का पालना बनी। संसार की कुल जनसंख्या 4 अरब 4 करोड़ 50 लाख है (सन् 1976)। जिसका वितरण काफी असमान है। 90 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या उत्तरी गोलार्ध में मिलती है। यदि सोवियत संघ को एशिया में शामिल न भी किया जाये तो यह विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है।

प्रतिवर्ग किलोमीटर में रहने वाले लोगों की संख्या को ही जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक प्राकृतिक साधन, फसल उत्पादन के लिए अनुकूल जलवायु एवं मृदा तथा मानव का तकनीकी स्वर हैं। विश्व का लगभग 80 प्रतिशत भू-भाग लोगों के रहने योग्य नहीं है। या तो यह भू-भाग अति पहाड़ी अथवा अति शुष्क है या अति आद्र या अति गर्म या अति ठण्डे है जनसंख्या का कम घनत्व अधिकतर अफ्रीका के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों, दक्षिण अमेरिका के शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाड़ा के अधिकांश भागों में पाया जाता है। पश्चिम के औद्योगिक और पूर्व के कृषि प्रधान क्षेत्रों में जनसंख्या का भारी घनत्व पाया जाता है।

विशेषज्ञों का मत है कि लगभग 8000 ई० पू० विश्व की कुल आबादी लगभग 1 करोड़ थी, जो विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई थी। ईस्वी सन् के प्रारम्भ तक यह बढकर 30 करोड हो गई। यह अधिकतर प्राचीन नदी घाटी सभ्यता के क्षेत्रों तक ही सीमित थी। मध्य युग में विश्व के विभिन्न भागों में संघर्षपूर्ण स्थिति, युद्ध एवं महामारियों के कारण जनसंख्या में भारी उतार-चढ़ाव आये।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

प्रश्न (1) नदी, घाटियों को "सभ्यता का पालना" क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—नदी, घाटी सभ्यता का पालना—संसार में जितनी भी प्रारम्भिक सभ्यताएँ मिली हैं उनमें से अधिकतर सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में ही हुआ है। जैसे—भारत में सिन्धु घाटी की सभ्यता, मैसोपोटामिया की दजला-फरात घाटी की सभ्यता आदि। इन नदी घाटियों को "सभ्यता का पालना" कहने के निम्नलिखित कारण हैं :

1. पर्याप्त मात्रा में जल—मनुष्य ने कृषि का ज्ञान प्राप्त करने के बाद पशुओं का पालना शुरू कर दिया। पशुओं व कृषि के लिए पानी नदियों से मिला। अतः उसने नदी घाटियों में रहना शुरू कर दिया।

2. उपजाऊ भूमि—आदिम मानव को ऐसे स्थान की आवश्यकता थी, जहां की भूमि उपजाऊ हो और कृषि आसानी से हो सके। वह स्थान नदी घाटी ही हो सकती थी। यहाँ के मैदान नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बने थे अतः अधिक उपजाऊ थे।

3. भोजन सामग्री की सुविधा—मानव को इन नदी घाटियों में भोजन सामग्री आसानी से प्राप्त हो जाती थी। मछलियों का शिकार वह आसानी से कर लेता था। जो जंगली पशु वहाँ पानी पीने आते थे उन्हें आसानी से मार सकता था।

4. व्यापार में सुविधा—नदियाँ आवागमन के अच्छे साधन थी अतः आने जाने तथा व्यापार में आसानी थी।

5. उत्तम जलवायु—नदियों के पास का जलवायु उत्तम था। इसमें मानव की कार्यक्षमता में वद्धि होती थी।

6. मकान बनाने में सुविधा—नदियों के पास मिट्टी व पानी असानी से मिल जाता था अतः वहाँ मकान बनाने की सुविधा थी।

7 खनिज पदार्थों की प्राप्ति—नदी घाटियाँ बहुमूल्य धातुओं का भंडार रही हैं जैसे—लोहा, ताँबा, टीन आदि।

इन्हीं सब कारणों से नदी घाटियों को सभ्यता का पालना कहा जाता है।

प्रश्न (2) संसार में सर्वाधिक जनसंख्या वाला महाद्वीप कौन सा है?

उत्तर—संसार में सर्वाधिक जनसंख्या वाला महाद्वीप एशिया है। यहाँ विश्व कि 58% जनसंख्या निवास करती है।

प्रश्न (3) संसार के किस देश की जनसंख्या सबसे अधिक है?

उत्तर—संसार में चीन की जनसंख्या सबसे अधिक है। यहाँ की अनुमानित जनसंख्या 65 करोड़ है। विश्व में इससे अधिक जनसंख्या किसी देश की नहीं है।

प्रश्न (4) भारत के जनसंख्या के औसत घनत्व की तुलना संसार की जनसंख्या के औसत घनत्व से करिये।

उत्तर—भारत की जनसंख्या का औसत घनत्व व संसार की जनसंख्या का औसत घनत्व—मानसून जलवायु, विशाल मैदानों में जलौढ उपजाऊ मिट्टी तथा मानव की बस्ती के लम्बे इतिहास के फलस्वरूप भारत विश्व का अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है भारत में विश्व का केवल 2.3% भू-भाग है जबकि यहाँ विश्व की 14.8% जनसंख्या निवास करती है। दूनिया में क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत से 6 बड़े देश हैं, परन्तु जनसंख्या में चीन ही एक बड़ा देश है।

भारत में जनसंख्या का घनत्व 178 व्यक्ति प्रति वर्ग कि० मी० है जबकि

विश्व का घनत्व केवल 27 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर है। कुछ देशों में तो यह घनत्व ओर भी कम है। संसार के किसी भी भाग की तरह भारत में भी जनसंख्या के वितरण में काफी असमानता पाई जाती है।

प्रश्न (5) अर्जक जनसंख्या से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—अर्जक जनसंख्या—जनसंख्या का वह भाग जो आर्थिक कार्यों में लगा हुआ है अर्जक जनसंख्या कहलाता है। गत 50 वर्षों में जन्म दर केवल 70 प्रति हजार कम हुई जबकि मृत्यु दर 210 प्रतिहजारकमहुई। फलतः जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई है। भारत की कुल जनसंख्या में 42·4% 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे आते हैं जो लगभग एक तिहाई अर्जक जनसंख्या पर निर्भर हैं।

प्रश्न (6) संसार के अधिक जनसंख्या घनत्व वाले तीन क्षेत्रों के नाम बताइयें।

उत्तर—संसार के अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र—(1) पूर्वी एशिया जिसमें चीन और कोरिया की नदी घाटियाँ, जापान तथा उत्तर वियतनाम आते हैं। यह संसार का सबसे अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। यहाँ 93 करोड़ लोग रहते हैं।

(2) दक्षिण एशिया जिसमें भारत, बांग्ला देश तथा श्री लंका आते हैं संसार का दूसरा सर्वाधिक घना बसा क्षेत्र है जहाँ 58·8 करोड़ जनसंख्या निवास करती है।

(3) उत्तर पश्चिम यूरोप, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, डेनमार्क तथा पश्चिमी जर्मनी इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। यहाँ 17·5 करोड़ जनसंख्या है यह दुनिया का तीसरा घनी जनसंख्या वाला क्षेत्र है।

प्रश्न (7) जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि कब से हुई और क्यों ?

उत्तर—जनसंख्या की अत्याधिक वृद्धि का समय और कारण—1850 तक एशिया में जनसंख्या की वृद्धि मन्द गति से हुई। उस समय एशिया की कुल आबादी 32.7 करोड़ थी। परन्तु सन् 1920 के बाद जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई और बढ़कर यह सन् 1965 में 1 अरब 84 करोड़ 20 लाख हो गई।

विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या की वृद्धि विभिन्न रूपों में हुई। इस सम्बन्ध में तीन महत्त्वपूर्ण पहलू विचारणीय हैं :

(1) यूरोपीय सांस्कृतिक समुदाय जिसने नई दुनिया में स्थापित बस्तियों में जनसंख्या की विशेष वृद्धि की (2) अकाल और विशेष रोगों के बाद भी निम्न मृत्यु दर तथा अपरिवर्तित जन्मदर के कारण तीसरी दुनिया में जन्म-उत्तर प्रत्येक ग्रह

प्रश्न (ख) भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ती रहा है क्योंकि :

उत्तर—भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है क्योंकि हमारे देश में मृत्यु दर बराबर घट रही है।

प्रश्न (8) अधिकांश जनसंख्या उत्तरी गोलार्ध में ही क्यों पाई जाती है ?

उत्तर—उत्तरी गोलार्ध में अधिक जनसंख्या का कारण—90% से अधिक जनसंख्या उत्तरी गोलार्ध में पाई जाती है। इसकी 60% जनसंख्या मुख्यतः 10° उत्तरी अक्षांस से 40° उत्तरी अक्षांस तक महाद्वीप में निवास करती है। 30% आबादी यूरोप के मध्य अक्षांसों में पाई जाती है। लगभग 1% लोग 60° उत्तरी अक्षांस से उत्तरी ध्रुवों की ओर रहते हैं।

उत्तरी गोलार्ध में अधिक जनसंख्या का कारण वहाँ के प्राकृतिक साधनों का सही उपयोग है। इसके यातायात के साधन उत्तम है। वहाँ की जलवायु भी मानव जीवन के अनुकूल है। खेती-बाड़ी, उद्योग-धन्धे, खनन क्षेत्र तथा मत्स्य ग्रहण क्षेत्रों की अधिकता है। इस कारण जनसंख्या अधिक है।

प्रश्न (9) पिछले 50 वर्षों में भारत की जनसंख्या में भारी वृद्धि का क्या कारण है ?

उत्तर—भारत की जनसंख्या में वृद्धि का कारण—पिछले 50 वर्षों में जन्मदर केवल 70 प्रति हजार कम हुई जबकि मृत्यु दर 210 प्रति हजार कम हुई। फलतः जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई। उच्च जन्म दर से गांव का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ।

प्रश्न (10) प्रारम्भिक काल में संसार में जनसंख्या की वृद्धि बहुत ही मन्द गति से क्यों हुई ?

उत्तर—प्रारम्भिक काल में मन्द गति से जनसंख्या वृद्धि का कारण—प्रारम्भिक काल में जनसंख्या की वृद्धि बहुत ही निम्न गति से हुई है। इसका कारण यह था उस समय अकाल, बाढ़, महामारी अधिकतर होती रहती थी। इनके बचाव का कोई उपाय नहीं था। कहने का तात्पर्य यह है कि जन्म दर कम और मृत्यु दर अधिक थी। इस कारण जनसंख्या की वृद्धि बहुत ही निम्न गति से हुई।

प्रश्न 2. अन्तर स्पष्ट करो :

प्रश्न (1) अर्जक जनसंख्या और आश्रित जनसंख्या।

उत्तर—

अर्जक जनसंख्या	आश्रित जनसंख्या
अर्जक जनसंख्या वह जनसंख्या है जो आर्थिक क्रियाओं में लगी है।	आश्रित जनसंख्या वह जनसंख्या है जो आर्थिक क्रियाओं में भाग नहीं

की दृष्टि से भारत से 6 बड़े देश हैं, परन्तु जनसंख्या में चीन ही एक बड़ा देश है।

भारत में जनसंख्या का घनत्व 178 व्यक्ति प्रति वर्ग कि० मी० है जबकि

प्रश्न (2) कुल जनसंख्या और जनसंख्या का औसत घनत्व।
उत्तर—

कुल जनसंख्या	जनसंख्या का औसत घनत्व
किसी देश या प्रांत में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या कहते हैं।	यदि किसी देश या प्रांत अथवा महाद्वीप की कुल संख्या को प्रति वर्ग किलोमीटर पर भाग करके औसत निकाला जाये तो उसे उस स्थान की औसत जनसंख्या का घनत्व कहते हैं।

प्रश्न (3) जन्म दर और वृद्धि दर।
उत्तर—

जन्म दर	वृद्धि दर
मध्य वर्ष की जनसंख्या के प्रति हजार व्यक्तियों पर किसी देश या क्षेत्र में जन्में जीवित बच्चों की संख्या को जन्म दर कहते हैं। भारत में 1921 में जन्म दर 46 प्रति हजार थी और इस समय यह लगभग 39 प्रति हजार है।	किसी क्षेत्र या प्रदेश की मध्य वर्ष की जनसंख्या के प्रति हजार में जन्म दर तथा मृत्यु दर में अन्तर को जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर कहते हैं। यह हमेशा प्रतिशत में व्यक्त की जाती है। 50 वर्ष पूर्व वृद्धि दर 1 प्रतिशत थी और अब यह लगभग 2.5% है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से प्रत्येक के लिए एक परिभाषिक शब्द दो :

उत्तर—(1) प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या—स्त्री-पुरुष अनुपात।

(2) प्रति वर्ग किलोमीटर में लोगों की औसत संख्या—जनसंख्या का घनत्व।

(3) संसार में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि—जनसंख्या वृद्धि।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों को सर्वोचित विकल्प से पूरा करो :

प्रश्न (क) उत्तरी-पश्चिमी यूरोप में अधिक जनसंख्या पाई जाती है क्योंकि :

उत्तर—उत्तरी-पश्चिमी यूरोप में अधिक जनसंख्या पाई जाती है क्योंकि उत्तम मत्स्य ग्रहण क्षेत्र भोजन तथा रोजगार प्रदान करते हैं।

प्रश्न (ख) भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ती रही है क्योंकि :

उत्तर—भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है क्योंकि हमारे देश में मृत्यु दर बराबर घट रही है।

प्रश्न (ग) हम भारत की जनसंख्या को स्थायित्व प्रदान कर सकते है यदि हम :

उत्तर—हम भारत की जनसंख्या को स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं यदि हम नियोजित प्रयासों से जनसंख्या की जन्म दर कम कर सकें।

प्रश्न 5. संसार की जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक—प्रतिवर्ग किलोमीटर में रहने राले लोगों की संख्या को ही जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। कुल जनसंख्या तथा जनसंख्या का घनत्व दोनों ही विभिन्न कारकों पर निर्भर है। ये विभिन्न कारक निम्नलिखित हैं :

प्राकृतिक साधन—प्राकृतिक साधन भी जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करते हैं। जिन स्थानों पर खनिज पदार्थ अधिक होते हैं वहाँ खनन कार्य में अधिक आदमी लग जाते हैं। जल शक्ति के कारण बहुत से कारखाने स्थापित हो जाते हैं। इससे भारी संख्या में लोग वहाँ जाकर रहना शुरू कर देते हैं।

फसलों का उत्पादन—जिन स्थानों पर भूमि उपजाऊ होती है वहाँ खेती अधिक मात्रा में की जाती है। इससे जनसंख्या का एक बड़ा भाग फसलों के उत्पादन में लग जाता है।

अनुकूल जलवायु—जलवायु भी जनसंख्या के घनत्व पर विशेष प्रभाव डालती है। जिन स्थानों की जलवायु कठोर होती है वहाँ मानव कम रहना पसन्द करता है। दूसरी ओर जिन स्थानों का जलवायु अच्छा होता है वहाँ पर जनसंख्या अधिक होती है। जैसे—ग्रीनलैंड में कम जनसंख्या है और संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिक।

तकनीकी स्तर—जिन स्थानों पर उद्योग-धन्धे अधिक होते हैं वहाँ बहुत से कुशल इंजीनियर व कारीगर जाकर बस जाते हैं इससे वहाँ की जनसंख्या बढ़ जाती है।

यातायात के उत्तम साधन—यातायात से उत्तम साधन भी जनसंख्या के घनत्व पर अपना प्रभाव डालते हैं।

प्रश्न 6. भारत के सबसे अधिक और सबसे कम घनत्व वाले क्षेत्रों के नाम बताते हुए जनसंख्या के वितरण पर प्रकाश डालिए।

उत्त—भारत में जनसंख्या का वितरण—मानसून जलवायु, विशाल मैदानों में जलौढ उपजाऊ मिट्टी तथा मानव की बस्ती के लम्बे इतिहास के फलस्वरूप भारत विश्व का अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। भारत में जनसंख्या का घनत्व 178 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि विश्व का

घनत्व केवल 27 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है । देश के जिन भागों में समतल भूमि, मृदुल ताप तथा पर्याप्त वर्षा अवथा सिंचाई की सुविधा है वहाँ अच्छी कृषि के लिए उपजाऊ मृदा तथा पर्याप्त वर्धन काल प्राप्त होता है।

इसी के फलस्वरूप भारत के उत्तरी मैदान, तटीय भूमि तथा निम्न हिमालम की नदी घाटियों में घनी जनसंख्या है। दूसरी ओर हिमालय के ऊँचे-नीचे क्षेत्र, दक्षिण की पहाड़ियों की अनुर्वर भूमि, पूर्वी भारत की अधिक वर्षा वाली पहाड़ियाँ तथा राजस्थान और उसके चारों ओर की शुष्क भूमि ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ जनसंख्या विरल है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि देश के जिन भागों में कृषि के लिए अनुकूल दशायें हैं वहाँ अधिक घनी जनसंख्या वाले प्रदेश हैं। इसलिए देश की 80 % जनसंख्या गावों में रहकर कृषि पर निर्भर हैं।

तुलनात्मक रूप से जिन नगरो में औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास हुआ है वहाँ अधिक जनसंख्या पाई जाती है। फिर भी नगरों में देश की ⅛ जनसंख्या से अधिक नहीं पाई जाती।

प्रश्न 7. "जहाँ मानव सबसे बड़ी सम्पदा है वहाँ सबसे बड़ी विपदा भी है।"

उत्तर—मानव सबसे बड़ी सम्पदा—कोई देश बड़े आकार से अथवा विपुल प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर होने से ही बड़ा नहीं बन जाता। किसी देश की महत्ता वास्तव में उसके निवासियों से ही मानी जाती है। उसके निवासी ही अपने संगठित प्रयास, लगन और बुद्धिमानी से देश के प्राकृतिक साधनों को सम्पत्ति में रूपांतरित करते हैं।

भारत का वर्तमान स्वरूप यहाँ के निवासियों की अपनी प्रतिमा, कार्य के प्रति निष्ठा और परिश्रम का प्रतिफल है। उन्होंने देश को एक लम्बा इतिहास प्रदान किया है और भारत की एक विशिष्ट संस्कृति को जन्म दिया है। आज इस विशेष संस्कृति के कारण ही संसार के राष्ट्रों में भारत का व्यक्तित्व अलग से उभर कर आता है।

मानव सबसे बड़ी विपदा—जहाँ मानव देश की सबसे बड़ी सम्पदा हैं वहाँ दूसरी और देश के लिए सबसे बड़ी विपदा भी है। आज चीन और भारत को जो आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उसका कारण इन देशों की अधिक जनसंख्या ही हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण गाँव का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है जो अधिकतर कृषि पर निर्भर है। कृषि-भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने से खाद्य समस्या और भी जटिल बन गई है। इससे वनों को साफ किया गया है और पशुचारणिक खेती पर खाद्य फसलें पैदा

की जाने लगी हैं। इससे साधन सम्पदा का बहुत बड़ा भाग खाने, पहनने, मकान बनाने तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के सेवा कार्य में व्यय हो जाता है। जनसंख्या बढ़ने से खनिज सम्पदा घट रही है। वायु और जल प्रदूषित हो रहा है। वनस्पति जगत और प्राणी जगत के ह्रास से प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ रहा है।

स्वयं करें और खोजें

जनसंख्या में अग्रणीय दस देशों के नाम क्रमानुसार लिखते हुए, उनकी जनसंख्या तथा औसत घनत्व ज्ञात करिये। जनसंख्या के औसत घनत्व से सम्भाव्य समस्याओं पर विचार करिये।

जनसंख्या के अग्रणीय दस देश।

देश का नाम	कुल जनसंख्या (दस लाख में) (1976)
1. चीन	852.1
2. भारत	610
3. सोवियत संघ	256.5
4. संयुक्त राज्य अमेरिका	215.1
5. इण्डोनेशिया	139.6
6. जापान	112.8
7. ब्राजील	109.2
8. पकिस्तान	72.4
9. मैक्सिको	62.3
10. पूर्व जर्मनी	61.5

उपरोक्त देशों की जनसंख्या व औसत घनत्व पर विचार करने से पता लगता है कि जिन देशों में अधिक जनसंख्या है वहाँ की जमीन उपजाऊ है, मैदानी है व सिंचाई के उत्तम साधन भी हैं। परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वे अधिक उन्नत नहीं है जैसे—चीन, भारत।

दूसरी ओर रूस व अमेरिका दोनों के पास वैज्ञानिक साधन प्रचुर मात्रा में हैं उन्होंने जनसंख्या पर रोक भी लगाई हुई हैं इसलिए वहाँ पर सीमित जनसंख्या है। इण्डोनेशिया व जापान आदि देश समुद्र में स्थित होने के कारण अधिक भूमि से वंचित हैं। उनके क्षेत्र को देखते हुए वहाँ अधिक जनसंख्या नहीं हो सकती। क्षेत्रफल, विकसित साधनों के अभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के कारणों पर ही जनसंख्या का औसत घनत्व निर्भर है।

अध्याय 9

आर्थिक विकास का प्रारूप

भूमिका—पुरानी दुनिया का प्रायः हर देश आर्थिक विकास की निम्न अवस्थाओं से गुजर रहा है। (1) आखेट एवं पशुचारणिक क्रियाएँ (2) आदिम कृषि (3) आत्म निर्वाह तथा व्यापारिक प्रकार की विकसित कृषि (4) आधुनिक औद्योगिक एवं व्यापारिक क्रियाएँ। जहाँ तक नई दुनिया के समाज का सम्बन्ध है, वहाँ प्रारम्भिक रूप से एकदम नवीनतम आर्थिक क्रियाएँ भी देखी गई हैं। जिस प्रकार सोवियत संघ के अधीन मध्य एशिया के स्टेप्स क्षेत्र मशीनीकृत कृषि प्रदेश क्षेत्र में बदल गये, उसी प्रकार पुरानी दुनियाँ के विकासशील क्षेत्रों जैसे मध्य एशिया तथा अधिकांश अफ्रीका में आधुनिकीकरण के प्रभाव से एकदम परिवर्तन हुआ है।

विश्व के आर्थिक विकास में भारी अन्तर देखने को मिलता है। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश भारी धनी हैं, जबकि दूसरी ओर यूगाण्डा तथा तनजानियाँ बहुत निर्धन बने हुए हैं। परन्तु आर्थिक विकास के भिन्न स्तरों की प्रक्रिया में विकसित और पिछड़े देश कहने के बजाय आजकल उन्हें विकसित तथा विकासशील देशो के नाम से पुकारा जाता है।

हम प्रमुख तीन कारकों के आधार पर दुनिया के आर्थिक विकास का आसानी से पता कर सकते हैं—(1) जी० डी० पी० (समग्र घरेलू उत्पादक) का अर्थ है देश की कुल आय। (2) प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक कार्यों में लगे लोगों का अनुपात—विकासशील देशों में अधिकतर लोग प्राथमिक व्यवसायों में लगे हैं। (3) व्यापारिक ऊर्जा का प्रयोग—कुल ऊर्जा जिसे देश जैविक तथा अजैविक साधनों से प्रतिवर्ष प्राप्त करता है।

उक्त तीन कारकों पर आधारित आर्थिक विकास को तीन स्तरों में विभाजित करना सम्भव है—विकसित, मध्य स्थित (अर्धविकसित) तथा विकासशील निम्न समूह के रूप में विभाजित किया जा सकता है।

प्रायः देखा जाता है कि धनी देश अधिक धनी होते जा रहें हैं और गरीब देश पिछड़ते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए भारत 30 वर्षों में भारी प्रयास के बाद जापान के स्तर को प्राप्त कर सकेगा उतने में जापान हमसे 200 वर्ष

आस्ट्रेलिया	अर्जेन्टाइना	कम्बोडियाएवं	स्वाफ्र मेरयों के फल-
न्यूजीलेंड	दक्षिणी अफ्रीका संघ	भारत	वियतनाम
	जापान	पाकिस्तान	संयुक्त अरब
	फ्राँस	थाईलैण्ड	गण राज्य

की दुनिया तथा तीसरी दुनिया जिसमें एशिया तथा अफ्रीका के कई देश आते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम या सामान्य करने के लिए हाल ही में कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का निर्माण हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसके विभिन्न अंग इसी प्रकार के शुभ सूचक संगठन हैं। प्रत्येक देश छोटा हो अथवा बड़ा उसमें विकसित, अर्ध विकसित तथा पिछड़े क्षेत्र पाये जाते हैं।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :

प्रश्न (1) आर्थिक विकास की चार अवस्थाये कौन-सी हैं ?

उत्तर—आर्थिक विकास की अवस्थाएँ—पुरानी दुनिया का प्रायः हर देश आर्थिक विकास के निम्न अवस्थाओं से गुजरा है अथवा गुजर रहा है। आर्थिक विकास की निम्न चार अवस्थाएँ हैं :

1. आखेट एवं पशुचारणिक क्रियाएँ।
2. आदिम कृषि।
3. आत्म-निर्वाह तथा व्यापारिक प्रकार की विकसित कृषि
4. आधुनिक औद्योगिक एवं व्यापारिक क्रियाएँ।

प्रश्न (2) आर्थिक विकास के स्तर से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—आर्थिक विकास के स्तर का अर्थ—किसी देश के आर्थिक विकास के स्तर से अभिप्राय राष्ट्र द्वारा अपने साधनों के प्रयोग तथा आय से है जो प्रत्येक सदस्य द्वारा अर्जित की गई है।

प्रश्न (3) किसी देश का आर्थिक विकास किन कारणों से जाना जा सकता है ?

उत्तर—आर्थिक विकास के कारक—प्रमुख तीन कारकों के आधार पर दुनिया के किसी भी देश के आर्थिक विकास का आसानी से पता कर सकते हैं।

(1) जी० डी० पी० (समग्र घरेलू उत्पादक) का अर्थ है देश की वार्षिक कुल आय।

(2) प्राथमिक द्वितीयक तथा तृतीयक कार्यों में लगे लोगों का अनुपात विकासशील देशों में अधिकतर लोग प्राथमिक व्यवसायों में लगे हुए है, जबकि विकसित देशों में अधिकांश लोग तृतीयक व्यवसायों में लगे हैं।

(3) व्यापारिक ऊर्जा का प्रयोग—कुल उर्जा जिसे देश जैविक तथा अजैविक साधनों से प्रतिवर्ष प्राप्त करता है को देखते हुए वह आध[illegible] नहीं हो सकती। क्षेत्रफल, विकसित साधनों के अभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के कारणों पर ही जनसंख्या का औसत घनत्व निर्भर है।

उत्तर—आर्थिक विकास के स्तर—आर्थिक विकास को निम्नलिखित तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है :

1. विकसित 2. मध्य स्थित (अर्ध विकसित) 3. विकास शील। अन्तिम वर्ग को पुनः विकासशील उच्च समूह तथा विकासशील निम्न समूह के रूप में विभाजित किया जा सकता है।

प्रश्न (5) विश्व कि सबसे बड़ी शान्ति स्थापक संस्था का नाम बताइये।

उत्तर—विश्व की सबसे बड़ी शान्ति स्थापक संस्था—विश्व की सबसे बड़ी शान्ति स्थापक संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ' है।

प्रश्न (6) भारत के विकास स्तर को किन दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर—भारत के विकास का स्तर विभाजन—(1) भारत में उच्च आर्थिक विकास स्तर के दो क्षेत्र—(क) बम्बई, पूना, हुगली क्षेत्र, बंगलौर, कोयम्बटूर, कानपुर तथा दिल्ली क्षेत्र के औद्योगिक तथा शहरी क्षेत्र है।

(ख) प्रगतिशील कृषि क्षेत्र तथा व्यापारिक फसलों के क्षेत्र अथवा प्रधान औद्योगिक क्षेत्र जैसे तमिलनाडू, आँध्रप्रदेश में कृष्णा गोदावरी के डेल्टा क्षेत्र, अधिकाँश केरल, दक्षिणी कर्नाटक, अधिकाँश गुजरात आदि।

(2) मध्यम आर्थिक विकास वाले क्षेत्रों में मराठवाड़ा, आंध्रप्रदेश आदि है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित देशों को चार वर्गों—(1) विकसीत (2) अर्ध-विकसित (3) विकासशील (उच्च) (4) विकासशील (निम्न) में विभाजित करिए :

संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, कम्बोडिया, वियतनाम, पाकिस्तान, ब्रिटेन, जापान, ईरान, अफगानिस्तान, अल्जीरिया, संयुक्त अरब गणराज्य, सोवियत संघ, फ्रांस, जर्मनी, पोलैण्ड, यूगोस्लाविया, आस्ट्रिया, चिली, ब्रजील, मलयेशिया, नेपाल, थाईलैण्ड, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका संघ।

उत्तर—

विकसित देश	अर्द्ध विकसित देश	विकासशील (उच्च)	विकासशील (निम्न)
संयुक्त राज्य अमेरिका	सोवियत संघ	मलयशिया	अफगानिस्तान
आस्ट्रेलिया	चिली	ब्राजील	ईरान
न्यूजीलैंड	अर्जेन्टाइना	कोम्बोडिया	अल्जीरिया
	दक्षिणी अफ्रीका संघ	भारत	वियतनाम
	जापान	पाकिस्तान	संयुक्त अरब
	फ्राँस	थाईलैण्ड	गण राज्य

ब्रिटेन	नेपाल
जर्मनी	
पोलैण्ड	
यूगोस्लविया	
आस्ट्रिया	

प्रश्न 3. भारत के विभिन्न क्षेत्रों को तीन वर्गों में विभाजित करिये : प्रश्न (क) उच्च आर्थिक विकास (ख) मध्यम आर्थिक विकास (ग) निम्न आर्थिक विकास।

उत्तर—(क) उच्च आर्थिक विकास वाले क्षेत्र—यह क्षेत्र दो भागों में पाया जाता है (1) बम्बई, पूना, हुगली क्षेत्र, बंगलौर, कोयम्बटूर, कानपुर तथा दिल्ली क्षेत्र के औद्योगिक तथा शहरी क्षेत्र।

(2) प्रगतिशील कृषि क्षेत्र तथा व्यापारिक फसलों के क्षेत्र अथवा प्रधान औद्योगिक क्षेत्र जैसे तमिलनाडू, आँध्रप्रदेश में कृष्णा व गोदावरी के डेल्टा क्षेत्र, अधिकाँश केरल, दक्षिणी कर्नाटक, महाराष्ट्र का अधिकाँश भाग, दक्षिण कोकंण तथा मराठवाडा को छोड़कर, अधिकाँश गुजरात, मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र, राजस्थान गंगा नहर क्षेत्र, अजमेर जयपुर क्षेत्र, सम्पूर्ण पंजाब व हरियाणा इसमें शामिल हैं। इनके आलावा बाग-बगीचे युक्त तथा आलू उत्पादक क्षेत्र आते हैं, जिनमें पश्चिमी हिमालय, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा असम की ब्रह्मपुत्र की मध्य घाटी आती है।

(ख) **मध्यम आर्थिक विकास**—ये क्षेत्र अनिश्चित तथा शुष्क कृषि वाले हैं, जिनमें महाराष्ट्र के मराठवाडा, आँध्रप्रदेश का रायलसीमा तथा तेलंगाना, पूर्वी राजस्थान तथा आत्मनिर्वाह कृषि क्षेत्र जैसे दक्षिण कोकंण, तटीय उडीसा उत्तरी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश शामिल हैं। जम्मू और कश्मीर के क्षेत्र जिन्हें अधिक उपयोगी बनाना अति कठिन है वे भी इसी श्रेणी में आते हैं।

(ग) **निम्न आर्थिक विकास**—निम्न आर्थिक विकास का स्तर पर्वतीय, वनीय तथा अविकसित क्षेत्रों में पाया जाता है। इनमें अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणीपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अधिकाश मेघालय, सिक्किम, अधिकाँश हिमाचल प्रदेश, आन्तरिक मध्य प्रदेश, आन्तरिक उडीसा तथा शुष्क पश्चिमी राजस्थान आते हैं।

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सिंचित कृषि क्षेत्र, नगदी फसलों वाली खेती, खनिज सम्पदा तथा शक्ति का विकास, औद्योगिक विकास और शहरीकरण युक्त क्षेत्रों में आर्थिक विकास का उच्च स्तर पाया जाता है जबकि आदिम संस्कृति, अगम्य क्षेत्र तथा कठोर वातावरण वाले क्षेत्रों में

मुख्यतः आर्थिक विकास का निम्न स्तर मिलता है। देश के बहुत बड़े भाग में आर्थिक विकास को मध्य अवस्था पाई जाती हैं।

प्रश्न 4. उन सभी कारणों पर प्रकाश डालिए जिनके फलस्वरूप धनी और निर्धन देशों के बीच अन्तर निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

उत्तर—धनी और निर्धन देशों के बीच अन्तर—प्रायः यह देखने में आता है कि धनी देश अधिक धनवान होते जा रहे हैं जबकि गरीब देश पिछड़ते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए भारत 30 वर्षों में भारी प्रयास के बाद जापान के स्तर की प्राप्त कर सकेगा, उतने में जापान हम से 200 वर्ष आगे हो जाएगा। धनी और निर्धन देशों के बीच अन्तर बढ़ने के निम्नलिखित कारण हैं :

1. **तकनीकी ज्ञान**—जो धनी देश हैं उनके पास तकनीकी ज्ञान अधिक है और उसे प्रयोग करने का ढंग भी, इसलिए वे उन्नति के मार्ग पर बढ़ते जा रहे हैं।

2. **सौदेबाजी की शक्ति**—संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाड़ा, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, जापान तथा सोवियत संघ धन के बल पर सौदेबाजी की शक्ति रखते हैं। ये देश पिछड़े देशों के प्राकृतिक साधनों का लाभ उठा रहे हैं इससे ये ओर अधिक धनवान होते जा रहे हैं। गरीब देश—जैसे कि मध्य अफ्रीका में हैं खनिज निक्षेपों, वन सम्पदा, रोपण व्यापारिक फसलों जैसे; कोको, गन्ना, तथा कपास में बहुत अधिक धनी होते हुए भी ये देश पिछड़े हुए हैं।

3. **आधुनिक चिकित्सा सुविधा**—निर्धन देशों में आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ बढ़ी हैं और स्वस्थ्य सेवाओं में भी वृद्धि हुई है। इसके फलस्वरूप मृत्यु दर कम हुई है ओर जनसंख्या बढ़ी है। इससे ये देश ओर भी कठिनाई में पड़ गये हैं।

4. **धनी देशों की राजनीतिक आकांक्षाएँ**—धनी देश इन देशों को शिक्षा एवं कुशलताओं के विकास के लिए मदद नहीं कर रहे हैं। वे देश इन देशों को भारी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र दे रहे हैं। इस प्रकार अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने में लगे है।

इन्हीं सब कारणों से धनी और निर्धन देशों के बीच अन्तर निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न 5. "प्रत्येक राष्ट्र में विभिन्न आर्थिक स्तरों का पाया जाना स्वभाविक है।" उदाहरण देते हुए स्पष्ट करिये।

उत्तर—प्रत्येक राष्ट्र में विभिन्न आर्थिक स्तर—प्रत्येक देश चाहे वह छोटा हो अथवा बड़ा उसमें विकसित, अर्ध विकसित तथा पिछड़े क्षेत्र पाये जाते हैं।

प्रमुख प्राकृतिक साधन, प्रतिकूल जलवायु सम्बन्धी कारक, सीमित मानव शक्ति तथा कुशलतापूर्वक प्राकृतिक साधनों का सीमित उपयोग ऐसे प्रधान कारण हैं जिनमें फलस्वरूप प्रादेशिक विकास में भिन्नता मिलती है। इसके लिए हम भारत का उदाहरण ले सकते हैं—भारत के बम्बई, पूना, हुगली क्षेत्र, बंगलोर कानपुर आदि उच्च आर्थिक स्तर क्षेत्र में आते हैं। इनके अलावा बाग-बगीचे युक्त तथा आलू उत्पादक क्षेत्र आते हैं, जिनमें पश्चिम हिमालय, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा असम की ब्रह्मपुत्र की मध्य घाटी आती है।

दूसरी ओर देश का कुछ भाग आर्थिक विकास में मध्य स्थिति के अन्तर्गत आता है। ये क्षेत्र अनिश्चित तथा शुष्क कृषि वाले है, जिनमें महाराष्ट्र के मराठवाडा, आंध्र प्रदेश का रायलसीमा तथा तेलगाना, पूर्वी राजस्थान का आत्म-निर्वाह कृषि क्षेत्र जैसे—दक्षिण कोंकण, तटीय उड़ीसा, उत्तरी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश शामिल हैं।

भारत के कुछ ऐसे भी भाग हैं जो निम्न आर्थिक विकास स्तर के अन्तर्गत आते हैं। इनमें पर्वतीय, वनीय तथा अविकसित क्षेत्र आते हैं। इनमें अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अधिकांश मेघालय, सिक्किम, अधिकाश हिमाचल प्रदेश, आन्तरिक मध्य प्रदेश, आन्तरिक उडीसा तथा शुष्क पश्चिमी राजस्थान आते हैं।

Bhawan's Sri Sankara Bhavan
Bhartiya Vidya Bhavan ★ Mahavidyalaya
606/

मुद्रक: कमाल प्रिंटिंग प्रेस, २५६०, नयी सड़क, दिल्ली-११०००६